मार्क्सवाद - लेनिनवाद

के सिद्धांत :

प्रारंभिक पाठ्यक्रम

प्रस्तावना

कम्युनिस्ट लीग का उद्देष्य ब्रिटेन में एक ऐसे राजनीतिक दल का निर्माण करना है जो ब्रिटेन में मजदूर वर्ग को नियोजित समाजवादी समाज की रचना करने में मदद कर सके।

वही राजनीतिक रचना करने में सफल हो सकती है जिसका आधार वह राजनीति विज्ञान हो जिसका आविष्कार और विकास (सर्वाधिक) कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, ब्लादिमीर लेनिन, जो सेफ स्तालिन और अनवर होक्सा ने किया। यह विज्ञान मार्क्सवाद–लेनिनवाद के रूप में जाना जाता है।

पिछले कुछ वर्षों में पूर्वी यूरोप में, सेवियत समाज सहित कई समाजवादी समाजों के स्थान में, स्तालिन की मृत्यु के बाद, पूंजीवादी समाजों की फिर से स्थापना हो गई है। यह 'घटना' प्रतिक्रांति का नतीजा नहीं थी बल्कि इसकी वजह अन्दर से पुरानी कम्युनिस्ट पार्टियों के विकृत और (भ्रष्ट) हो जाने में निहित थी। इन पार्टियों ने मार्क्सवादी लेनिनवादी सिद्धांतों का त्याग कर दिया था।

इसका सबब साफ हैः मजदूर वर्ग की पार्टी के प्रत्येक सदस्य को मार्क्सवाद–लेनिनवाद के सिद्धांतों की इतनी पक्की जानकारी होनी चाहिए जिससे कोई नेता जैसे ही वह इन सिद्धातों से विचलित हो पार्टी के सदस्य तुरन्त समझ लें कि वह विश्वासघाती और गद्दार है।

यह पाठ्यक्रम कम्युनिस्ट लीग के उम्मीदवार सदस्यों और उससे सहानुभूति रखने वालों के लिए है।

यह भाषण देने के परंपरागत तरीके को अस्वीकार करता है। जिसमें छात्रों की भूमिका निष्क्रिय श्रोताओं की होती है। ऐसे नियंत्रित वाद–विवाद के स्थान में प्रयास किया गया है कि छात्र इसके अध्ययन में सक्रिय भूमिका निभा सकें। मिस्र साथी को शिक्षक नियुक्त किया गया हो, उसका यह काम है कि कक्षा में सावधानी से चुने शब्दों में प्रश्नों की ऐसी श्रृंखला प्रस्तुत करें जिनके द्वारा विषय के बिन्दुओं को तर्क संगत तरीके से आगे बढ़ाया जाए। इस तरीके से सभी साथी चाहे वे शुरू में चुप रहें प्रत्येक सवाल का जवाब खुद सोचेंगे फिर उसकी तुलना उस उत्तर से अवश्य करेंगे जो सामूहिक बहस के बाद सामने आता है।

इस पाठ्यक्रम में जो जवाब दिए गए हैं, वे मॉडल उत्तर नहीं हैं बल्कि वे उन जवानों के लिए रास्ता दिखाते हैं जिन्हें शिक्षक कक्षा के छात्रों से ही बहस के दौरान प्राप्त करने की कोशिश करेगा। यदि कोई साथी सवाल का जवाब सैद्धांतिक रूप से गलत देता है तो वह उस अपनी टिप्पणी नहीं देगा बल्कि पूछेगा ''क्या सब लोग इस से सहमत हैं?'' वह इस प्रकार गलती की आलोचना और सवाल का सही जवाब जो सच्चाई के करीब हो छात्रों की बहस से निकल जाएगा। जिससे वह साथी, जिसने गलत जवाब दिया था, अपने को 'हीन' न समझ। अगर कक्षा के द्वारा सही उत्तर निकलवाया न जा सके, तो शिक्षक एक साथी की हैसियत से दिए गए गलत जवाब की कमियों की ओर इशारा करेगा और इन आपत्तियों के संदर्भ में सही उत्तर कक्षा से प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

यदि सही उत्तर दिया जाए तो भी शिक्षक को पूंछना चाहिए 'क्या सब इससे सहमत हैं?' और फिर संदेह प्रकट किये जाएं तो उनका समाधान करना चाहिए। जब सही जवाब पर आम सहमति हो जाए, तो शिक्षक को संक्षिप्त निष्कर्ष देकर नए प्रश्न की ओर बढ़ना चाहिए।

प्रश्न साथियों से व्यक्तिगत रूप से न पूंछे जाएं बल्कि सामूहिक रूप से कक्षा को संबोधित किए जाएं। कुछ साथी शुरू में प्रश्न का उत्तर देने में संकोच कर सकते हैं, हालांकि नियंत्रित बहस की पद्धति उन्हें उसका जवाब सोचने में मदद करती है चाहे वे उसे अभिव्यक्त न करें। शिक्षक ऐसे साथियों को कुछ कहने के लिए प्रेरित करने के लिए उनसे बहस के दौरान पूंछ सकते हैं, 'क्या तुम इस बात से सहमत हो?'

निःसंदेह, जब इस पाठ्यक्रम के अनुसार कक्षाएं चलाई जाएंगी तो उसके अनुभव के आधार पर इस पाठ्यक्रम के विषयों और पद्धति में सुधार किए जा सकते हैं।

कम्युनिस्ट लीग शिक्षकों और छात्रों के उन सभी सुझावों का स्वागत करेगी जो पाठयक्रम के भावी संस्करणों में सुधारों के उद्देश्य से भेजे जाएंगे।

विषय सूची

पहली कक्षा : समाज का विकास

दूसरी कक्षा : पूंजीवाद की कार्यपद्धति–भाग–1

तीसरी कक्षा : पूंजीवाद की कार्यपद्धति–भाग–2

चौथी कक्षा : राज्य और समाज का मार्ग

पांचवी कक्षा : पार्टी और मजदूर वर्ग

छठी कक्षा : राष्ट्रीयता का सवाल

सातवीं कक्षा : युद्ध

कक्षा आठ : समाजवाद की कार्य–पद्धति

कक्षा एक – समाज का विकास

1. अर्थशास्त्र क्या है?

यह उन पद्धतियों का विज्ञान है जिनके द्वारा लोग अपनी भौतिक जरूरतों (भोजन, वस्त्र, निवास आदि) को पूरा करते हैं।

2. राजनीति क्या है?

यह पद्धतियों का विज्ञान है जिनके द्वारा लोग समाज में अपना संगठन बनाते हैं।

3. उत्पादन क्या है?

कच्चे माल का वस्तुओं अर्थात उत्पादों में रूपान्तरण जिनका लोग उपयोग कर सकते हैं।

(नोट : एक उत्पादक प्रक्रिया का उत्पाद, जैसे लोहा, किसी अन्य उत्पादक प्रक्रिया जैसे इंजीनियरिंग, का कच्चा माल हो सकता है।)

4. उत्पादन के साधन क्या हैं?

वे औजार जिनका उपयोग लोग उत्पादन की क्रिया में करते हैं– पत्थर की कुल्हाड़ी से लेकर स्वचालित यंत्रों का कारखाना।

5. इतिहास को ज्ञात प्रमुख सामाजिक प्रणालियां क्या हैं?

1. आदिम साम्यवाद, जैसे अफ्रीकी, कबीलाई समाजों में।
2. दासता, जैसे रोमन साम्राज्य में,
3. सामन्तवाद, जैसे मध्यकालीन यूरोप में,
4. पूंजीवाद, जैसे आज ब्रिटेन में है,
5. समाजवाद, जिसका अस्तित्व सोवियत संघ में लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में था।

6. शोषण क्या है?

दूसरों के श्रम पर अंशतः या पूर्णतः जीवन बिताना।

7. सामाजिक वर्ग क्या है?

एक सामाजिक समूह जिसके उत्पादन के साधनों से विशिष्ट संयन्तिक संबंध हैं। एक वर्ग के सदस्य

1. उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं और उस वर्ग का शोषण करते हैं जो उत्पादन के साधनों का स्वामी नहीं हैं अथवा।

2 उत्पादन के साधनों के मालिक हैं लेकिन अपने श्रम के द्वारा जीविका कमाते हैं अथवा

3. उत्पादन के साधनों के मलिक नहीं हैं और अपनी श्रम क्षमता को उन्हें बेचकर जीवित रहते हें जो उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं।

पहली श्रेणी का वर्ग **शोषक वर्ग** है और तीसरी श्रेणी का **वर्ग शोषित** वर्ग है।

8. आज ब्रिटेन में बुनियादी सामाजिक वर्ग कौन हैं?

1. **पूंजीपति वर्ग** या **बुर्जुआजी** जो उत्पादन के प्रमुख साधनों का मालिक है और उस सामाजिक वर्ग के शोषण पर जीवित है जो उत्पादन के साधनों का मालिक नहीं है,

2. **मध्यम वर्ग** या **निम्न बुर्जुआ वर्ग** जो उत्पादन के छोटे साधनों का मालिक है और स्वयं अपने श्रम पर मुख्यतः जीवित है तथा,

3. **मजदूर वर्ग** या **सर्वहारा** जो उत्पादन के साधनों के स्वामित्व से वंचित है और जो अपनी श्रम शक्ति का पूंजीपति वर्ग को बेचकर जिन्दा रहता है।

9. इतिहास को ज्ञात मौन सामाजिक प्रणालियां शांषण पर आधारित हैं?

1. दासता (जिसमें दासों का मालिक वर्ग दासों का शोषण करता है),
2. सामन्तवाद, (जिसमें सामन्ती कुलीन वर्ग कृषि दासों के वर्ग का शोषण करता है) तथा
3. पूंजीवाद (जिसमें पूंजीपति वर्ग मजदूर वर्ग का शोषण करता है)।

10 **एक सामाजिक प्रणाली से दूसरी सामाजिक प्रणाली में ऐतिहासिक परिवर्तन का बुनियादी कारण क्या है?**

औजारों और तकनीकों का विकास

यह प्रक्रिया किसी विशेष सामाजिक प्रणाली के अंतर्गत शुरू होती है और फिर ऐसे मोड़ पर पहुंचती है जब नए औजारों और तकनीकों का आगे विकास या उनका पूरा उपयोग उस सामाजिक प्रणाली के अंतर्गत करना, संभव नहीं होता। इससे उत्पन्न निराशाएं एक राजानीतिक आन्दोलन को जन्म देती हैं जिसका उद्देश्य और कार्य पुरानी सामाजिक, प्रणाली को एक नई व्यवस्था में बदलना होता है। अन्त में जब यह परिवर्तन कर लिया जाता है, तो नई सामाजिक प्रणाली के अंतर्गत नए औजारों और तकनीकों के विकास की अनुमति मिल जाती है।

मानव समाज के पहले चरण में औजारों और तकनीकों का यप इतना आदिम था और उत्पादन इतना कम थे कि मनुष्य केवल अपनी और अपने परिवार की न्यूनतम जरूरतों का ही मुश्किल से पूरा कर सकता था। इसलिए उसके पास कोई अधिशेष नहीं बचता था जिसे कोई दूसरा उससे ले सके। इस प्रणाली में शोषण असंभव था, उत्पादन के साधनों पर आदिम साम्यवाद की प्रणाली कहते हैं।

इसलिए, औजारों और तकनीकों के विकास के फलस्वरूप, आदिम साम्यवाद के स्थान में दासता की स्थापना हुई। समाज दो वर्गों में बंट गयाः शोषण करने वाले, दासों के मालिकों का वर्ग और शोषित दासों का वर्ग।

परंतु दासता के अंतर्गत औजारों और तकनीकों का विकास जारी रहा और फिर समाज इस बिन्दु पर पहुंचा जब दास का बल प्रयोग पर आधारित श्रम (जो केवल दंड के भय से काम करता था) इन नए औजारों और नकनीकों का उचित उपयोग और विकास करने में सक्षम नहीं था। फलतः, दासों के मालिकों ने स्वयं अपने शोषण के आधार में क्रमशः परिवर्तन कर लिया और उसे एक नई प्रणाली का रूप दिया। इस प्रणाली में शोषित किसानों को नए औजारों और तकनीकों के विकास में कुछ दिलचस्पी हुई इस प्रकार दासों का कृषि दास कानून द्वारा अपने सामन्त की जायदाद से बंधे हुए थे, फिर भी वे खाली वक्त में अपनी जमीन की पट्टियों पर काम कर सकते थे। तथापि, उन्हें अपने सामंत की जायदाद पर भी काम करना पड़ता था और अपनी भूमि की उपज का एक अंश भी उसे देना पड़ता था।

परन्तु सामंतवाद के अंतर्गत और औजारों और तकनीकों का और आगे विकास हुआ। शहरों में व्यापारियों और शिल्पियों के एक नए वर्ग का आगमन हुआ। कृषि दासों ने उदरीयमान सफलता प्राप्त की और उनकी श्रम सेवा को मुद्रा – किरायों की प्रणाली में बदल दिया गया।

श्रम सेवा के उन्मूलन की वजह से सामंतों को अपनी निजी जायदादों पर काम करने के लिए मजदूर मिलने में कठिनाई होने लगी। इसे प्राप्त करने के लिए और अन्य गौण कारणों से उन्होंने किसानों की अपनी जमीन की घेराबंदी शूरू की और इस प्रकार उन्हें मजबूर कर दिया कि वे जिन्दा रहने के लिए उनके खेतों पर पगार लेकर काम करें।

भूमि से बेदखल बहुसंख्यक किसान रोजगार की तलाश में शहरों में चले गए जहां उन्होंने व्यापारियों और शिल्पकारों से काम प्राप्त किया। इस तरह मजदूर वर्ग का जन्म हुआ। सामंती समाज के ढांचे के अंतर्गत एक नई आर्थिक प्रणाली पूंजीवाद का विकास शुरू हुआ।

परंतु व्यापारी पूंजीपतियों का पता चला कि पूंजीवादी प्रणाली के विकास के लिए उनके प्रयासों को (जिन पर उनकी प्रगति निर्भर थी) शासक जमींदार अभिजात वर्ग ने विफल कर दिया। इस निराशा ने सामाजिक प्रणाली को बदलने के लिए एक राजनीतिक आंदोलन को उत्पन्न किया, और अन्ततः भूस्वामित्व कुलीन वर्ग की राजनीतिक सत्ता का उन्मूलन कर दिया। पूंजीपति वर्ग वास्तविक शासक तर्ग बन गया।

पूंजीपति समाज के ढांचे के अंतर्गत औजारों और तकनीकों का अभूतपूर्व गति से विकास किया गया। बीसवीं सदी में, हम उस बिन्दु पर पहुंच गए हैं जब इन औजारों और तकनीकों का आगे विकास उस सामाजिक प्रणाली के निरन्तर अस्तित्व की वजह से रुक गया है जिसकी उपयोगिता आम लोगों के लिए समाप्त हो गयी है। पूंजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत संकट का यह आधार है और इसने उस आन्दोलन के अस्तित्व को जन्म दिया है जो वर्तमान सामाजिक प्रणाली के स्थान में एक नई प्रणाली की स्थापना करना चाहता है– यह समाजवादी आंदोलन है।

इस शताब्दी में मजदूर वर्ग ने शिव के एक तिहाई हिस्से में पूंजीवादी प्रणाली का उन्मूलन करने में और समाजवादी समाज की बुनियादें रखने में सफलता पाई, यद्यपि कुछ कारणों से जिनका विश्लेषण इस पाठ्यक्रम में बाद में किया जाएगा, इनमें से अधिकांश देशों में पूंजीवाद को अस्थायी रूप से फिर स्थापित कर लिया गया है।

ब्रिटेन में समाजवादी समाज की स्थापना करना एक ऐसा ऐतिहासिक कार्य है जिसे ब्रिटिश मजदूर जनता को पूरा करना है।

11. ''प्रगतिशील'' शब्द का क्या अर्थ है?

वह जो समाज का आगे विकास करने में मदद करता है

12. ''प्रतिक्रियावादी'' शब्द का क्या अर्थ है?

वह जो समाज के आगे विकास को रोकता है या उसे पीछे ले जाता है।

13. राज्य क्या है?

शक्ति का यंत्र जिसके द्वारा कोई सामाजिक वर्ग शेष जनता पर अपने शासन को कायम रखता है।

आदिम साम्यवाद के वर्ग–बिहीन समाज में राज्य के यंत्र का अस्तित्व नहीं था। राज्य का अस्तित्व वर्ग विभाजित समाज की स्थापना के साथ शुरू हुआ क्योंकि अल्पसंख्यक, दासों के स्वामी वर्ग, को बहुसंख्यक शोशित दासों को अपने नियंत्रण में रखने के लिए इसकी आवश्यकता पड़ी।

दासता पर आधारित समाज में राज्य दासों के स्वामी वर्ग के शासन का यंत्र था। सामंती समाज में यह भू–स्वामी अभिजात वर्ग के शासन का यंत्र था। पूंजीवादी समाज में यह पूंजीपति वर्ग`क शासन का यंत्र है।

जैसा हम देखेंगे, मजदूर वर्ग (यद्यपि यह शोषक वर्ग नहीं है और न कमी होगा। को भी बल प्रयोग के अपने यंत्र की जरूरत होती है अर्थात अपने अपने राज्य की जो समाजवादी समाज को कायम रखने और धन तथा शक्ति से वंचित पूंजीपति वर्ग को उसके उन्मूलन से रोके। इसलिए, समाजवादी समाज में राज्य श्रमिक जनता के शासन का यंत्र होता है।

14. क्रांति क्या है?

किसी वर्ग के शासन का अधिक प्रगतिशील वर्ग के शासन के द्वारा बलपूर्वक उन्मूलन।

15. इतिहास में किन सामाजिक प्रणालियों की स्थापना क्रांति के द्वारा की गई?

(1) पूंजीवादी प्रणाली जिसकी स्थापना पूंजीवादी या बुर्जुआ क्रांति के माध्यम से हुई जिसमें सामंती अभिजात वर्ग की राजनीतिक सत्ता का क्रांतिकारी ढंग से उन्मूलन कर दिया गया।

(2) समाजवादी प्रणाली किसकी स्थापना समाजवादी या सर्वहारा क्रांति के माध्यम से हुई जिसमें पूंजीपति वर्ग की राजनीतिक सत्ता का क्रांतिकारी ढंग से उन्मूलन कर दिया गया।

16. प्रति–क्रांति क्या है?

वर्ग के शासन द्वारा बलपूर्वक उन्मूलन।

उदाहरण के लिए, पहले विश्व युद्ध के बाद हंगरी के पूंजीपति वर्ग ने हंगेरियन सोवियत रिपब्लिक के प्रतिक्रांतिकारी उन्मूलन के द्वारा मजदूर वर्ग से सत्ता छीन कर फिर अपने हाथ में ले ली।

17. किस सामाजिक वर्ग ने सत्ता पर अधिकार किया?

(1) सत्रहवीं सदी के ब्रिटिश क्रांति के द्वारा?

ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग ने।

(2) अठारहवीं सदी की फ्रांसीसी क्रांति के द्वारा?

फ्रांसीसी मजदूर वर्ग ने।

(3) मार्च 1917 की रूसी क्रांति के द्वारा?

रूसी पूंजीपति वर्ग ने।

(4) नवंबर 1917 की रूसी क्रांति के द्वारा?

रूसी मजदूर वर्ग ने।

कक्षा दो : पूंजीवाद की कार्य–पद्धति (भाग एक)

1. पण्य क्या है?

कोई वस्तु जिसका उत्पादन विनिमय के लिए किया जाए, न कि उत्पादक और उसके परिवार के व्यक्तिगत उपयोग के लिए।

किसान जो अपने परिवार के भोजन के लिए शब्जियां उगाता है, पण्य का उत्पादन नहीं करता **बल्कि उपयोग के लिए उत्पादन** करता है। लेकिन अगर वह स्थानीय सराय के मालिक से शराब से विनिमय के लिए उन्हें उगाता है तो वह विनिमय के लिए उत्पादन में संलग्न है अर्थात **पण्य के उत्पादन** में।

2. सरल पण्य उत्पादन क्या है?

ऐसे उत्पादकों के द्वार पण्यों का उत्पादन जो स्वयं अपने उत्पादन के साधनों के मालिक हैं जैसे सामंती प्रणाली के अंतर्गत हस्तशिल्पी इस तरह का उत्पादन करते थे।

3. पूंजीवादी पण्य उत्पादन क्या है?

पूंजीवादी समाज में मजदूर वर्ग के उत्पादकों के द्वारा पण्यों का उत्पादन अर्थात ऐसे उत्पादकों के द्वारा जो स्वयं अपने उत्पादन के साधनों के मालिक नहीं हैं और इसलिए, जीवित रहने के लिए, पूंजीपतियों से जो उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं, रोजगार मांगने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

4. बाजार क्या है?

वह क्षेत्र जहां जो किसी पण्य को बेचना और जो उसे खरीदना चाहते हैं आपसी संपर्क में आते हैं। इस प्रकार हम स्थानीय पशु–धन के बाजार की बात कर सकते हैं। न ही किसी पण्य के बाजार की बात कर सकते हैं। संचार प्रणाली के माध्यम से संपर्क स्थापित किया जाता है, वहां विश्व स्तर पर बाजार बन जाता है जैसे विश्व तेल बाजार।

जिस बाजार में अलग अलग अनेक व्यक्ति या औद्योगिक इकाइयां पण्यों को बेचने और खरीदने के लिए मौजूद होते हैं, उसे **प्रतियोगी बाजार** कहते हैं।

5. पण्य की विनिमय दर क्या है?

अन्य प्रकार के पण्यों की संख्या जिनसे किसी पण्य का विनिमय किसी खास बाजार में किसी खास वक्त पर हो सकता है। अगर किसी शहर के मवेशी बाजार में एक गाय का विनिमय दो सुअरों से होता है तो उस बाजार में गाय की विनिमय दर दो सुअर हैं और सुअर की विनिमय दर आधी गाय के बराबर है।

6. किसी पण्य का मूल्य क्या है?

स्पष्टतः यह किसी खास बाजार में उसकी विनिमय दर के बराबर आवश्यक रूप से नहीं है। जैसे पिछले उदाहरण में हम कह सकते हैं कि गाय दो सुअरों की विनिमय दर से अधिक अथवा कम मूल्यवान है।

दो पण्यों के बीच की विनिमय दर की बुनियाद उनके उत्पादन के लिए आवश्यक **श्रम के सापेक्ष परिमाण** पर निर्भर है।

इसलिए किसी पण्य का मूल्य **उसके उत्पादन में संलग्न आवश्यक श्रम समय** के द्वारा निर्धारित हाता है। इसलिए अगर कोई एस्कॉर्ट के उत्पादन में ब्रायर पाइप के उत्पादन की अपेक्षा 4,000 गुना अधिक समय लगता है तो कार यका मूल्य पाइप के मूल्य से 4,000 गुना अधिक होगा।

7. प्रतियोगिता पर आधारित बाजार में किसी पण्य की विनिमय दर का निर्धारण कौन करता है?

आपूर्ति और मांग, जो विनिमय दर को उसके मूल्य से ऊपर या नीचे ले जाती है।

अगर कपड़े की कमी हो, तो जो उसे खरीदना चाहते हैं वे उसे प्रापत करने के लिए **उसके मूल्य से अधिक,** कीमत देना पसंद करेंगे। दसरी ओर, अगर कपड़े की बहुतायत हो तो जो उसे बेचना चाहते हैं, वे उसके मूल्य से कम कीमत पर बेचने के लिए तैयार हो जाएंगे जिससे वह उनके पास पड़ा न रहे।

तथापि, अगर विनिमय दर कपड़े क मूल्य से उसकी कम आपूर्ति की वजह से, अधिक हो तो कपड़े के उत्पादन से अत्यधिक ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकेगा, अधिक लोग कपड़ा बुनेंगे और कपड़े का उत्पादन उस वक्त तक बढ़ता रहेगा जब तक उसकी विनिमय दर अपने मूल्य से फिर घटने न लगे। इससे विपरीत प्रक्रिया तब शुरू होगी जब उसकी विनिमय दर मांग की तुलना में आपूर्ति कम होने की वजह से उसके मूल्य से कम होगी ; कपड़े के उत्पादन पर तब बहुत कम कीमत मिलेगी, कपड़े का उत्पादन तब तक घटता जाएगा जब तक विनिमय दर उसके मूल्य से अधिक न हा जाए।

इसलिए, प्रत्येक प्रतियोगी बाजार में **प्रत्येक पण्य की विनिमय दर की प्रकृति होती है कि वह लंबी अवधि I में अपने मूल्य के बराबर हो जाए।**

8. 'वार्टर' क्या है?

एक पण्य की दूसरे पण्य से सीधी अदला–बदली जैसे गेहूं के बदले ईंटें।

9. मुद्रा–धन क्या है?

कोई पण्य या पण्य का प्रतीक, जैसे बैंक–नोट, जो सोने के किसी मूल्य का प्रतीक है। जिसे किसी विशेष जनसमुदाय में साधारणतः **विनिमय का माध्यम** समझा जाता है।

गुप्ता प्रणाली 'वार्टर' पद्धति में निहित अनेक कठिनाइयों को दूर करती है। 'वार्टर' प्रणाली में यदि बुनकर को जूतों की जरूरत है तो उसे चर्मकार को खोजना पड़ेगा जिसे कपड़ा चाहिए। जब मुद्रा का सामाजिक प्रचलन हो तो वह किसी से भी मुद्रा लेकर उसे अपना कपड़ा बेच सकता है, और फिर विनिमय के इस माध्यम से वह किसी चर्मकार से जूते खरीद सकता है।

10 कीमत क्या है?

किसी पण्य की विनिमय दर जिसकी अभिव्यक्ति मुद्रा के वे माध्यम से की जाए।

11. बहुमूल्य धातुओं जैसे सोना और चांदी का उपयोग मुद्रा धन के रूप में क्यों किया जाता है?

उपयोग तथा लाने ले जाने में सुविधा के कारण दुर्लभ होने की वजह से, उनके उत्पादन में अत्यधिक मात्रा में भी बहुत मूल्य निहित होता है।

12. श्रम शक्ति क्या है?

किसी निश्चित समय की अवधि तक किसी श्रमिक की कार्य क्षमता।

श्रमिक उत्पादन के साधनों का स्वामी नहीं होता, इसलिए जीविका के लिए उसे अपनी श्रमशक्ति को पूंजीपति को बेचना पड़ता है। इसलिए, पूंजीवादी समाज में, श्रम शक्ति भी एक पण्य बन जाता है।

13. श्रम शक्ति का मूल्य कैसे निर्धारित होता है?

जैसा अन्य पण्यों के बारे में होता है, उसके उत्पादन में निहित सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम समय का परिमाण अर्थात उसके उत्पादन, कायम रखने और पुनरुत्पादन के लिए जरूरी पण्यों का मूल्य।

14 वेतन (पगार) क्या है?

श्रम शक्ति की कीमत।

प्रतियोगी बाजार में श्रम शक्ति की कीमत अन्य पण्यों की तरह आपूर्ति और मांग के अनुसार अपने मूल्य से ऊपर या नीचे जा सकती है लेकिन लंबी अवधि में यह उसकी श्रम शक्ति के बराबर हो जाती है।

15. अधिशेष मूल्य क्या है?

उत्पादन के दौरान मजदूर के श्रम के द्वारा अतिरिक्त मूल्य का सृजन जो उसकी श्रम शक्ति के मूल्य से **ऊपर और अधिक** होता है।

अगर मजदूर, जिसे पगार के रूप में सप्ताह में 100 पौंड मिलते हैं, केवल उस सप्ताह में 100 पौंड मूल्य के सृजन करे तो पूंजीपति को उसे रोजगार देने से कोई फायदा नहीं होगा और फिर वह ऐसा नहीं करेगा।

पूंजीपति किसी मजदूर को तभी काम देगा जब वह अपनी पगार के मूल्य से अतिरिक्त अधिक मूल्य का उत्पादन करे। दोनों में इसी अंतर को अधिशेष मूल्य कहते हैं। इसका सृजन श्रमिक करता किन्तु उसका अधिग्रहण पूंजीपति कर लेता है। यदि श्रमिक एक सप्ताह 200 पौंड के नए मूल्य का सृजन करता है और बदले में पगार के रूप में 100 पौंड पाता है, तो इस स्थिति में मजदूर से पूंजीपति को 100 पौंड का अधिशेष मूल्य प्राप्त हो जाता है। यदि यह पूंजीपति ऐसे 1000 मजदूरों का काम पर रखता है तो उसे एक सप्ताह में 10000 (एक लाख) पौंड का अधिशेष मूल्य मिल जाता है।

इसी पद्धति से पूंजीपति वर्ग मजदूर वर्ग का शोषण करता है। यह स्पष्ट है कि पूंजीवाद के अंतर्गत शोषण दासता या सामंतवाद के अंतर्गत शोषण की तुलना में अधिक जटिल और छिपे ढंग से किया जाता है।

16. पूंजी क्या है?

जब कुछ जिसे पूंजीवादी समाज में पूंजीपति अपने स्वामी में रखते हैं या किराया देकर अपने उपयोग में लाते हैं– इमारतें, मशीने, कच्चे माल, श्रम शक्ति जो उन्हें अधिशेष मूल्य प्राप्त करने में अर्थात श्रमिकों का शोषण करने में सहायता करे।

इस उद्देश्य के लिए लगाया हुआ मुद्रा–धन– इस प्रक्रिया को विनिवेश कहते हैं– भी पूंजी कहलाता हैं।

17 निरंतर पूंजी क्या है?

श्रम शक्ति को खरीदने के अलावा, सभी अन्य पूंजी। भूमि इमारतें, मशीनें, कच्चे माल स्वयं मूल्य का निर्माण नहीं कर सकते, बल्कि वे उपकरण है जिनके द्वारा मानवीय श्रम शक्ति नए मूल्य का सृजन करती है। उत्पादन प्रक्रिया के दौरान नहीं होता, इसलिए उन्हें निरंतर पूंजी कहते हैं।

18. परिवर्त्य पूंजी क्या है?

श्रम शक्ति को खरीदने में लगी पूंजी।

चूंकि पूंजीवादी उत्पादन प्रक्रिया में नए मूल्य का सृजन पूर्णतः श्रमिक की श्रम शक्ति के द्वारा होता है, इसमें लगी हुई पूंजी को परिवर्तनशील माना जाता है। पूंजीवादी उत्पादन के दौरान इसमें वृद्धि हो जाती है। इसलिए इसे परिवर्त्य पूंजी कहते हैं।

17. किराया, ब्याज और लाभ क्या है?

ये अधिशेश मूल्य के भाग हैं जिनका अधिग्रहण शोषक वर्ग के विभिन्न अनुभाग करते हैं (या पूंजीवादी समाज विभिन्न शोषक वर्ग कहते हैं)।

किराया उद्यमी पूंजीपति जमींदार को देता है, जि देकर वह अपने उद्योग के लिए भूमि/इमारतों का उपयोग कर सकता है।

ब्याज उद्योगपति सहूकार या बैंक को देता है जिसे देकर वह अपना उद्योग चलाने के लिए मुद्रा–धन द्वारा करता है।

लाभ अधिशेष मूल्य का वह हिस्सा है जिसको उद्योगपति किराए और ब्याज के भुगतान के बाद अपने पास रखता है।

किराया, ब्याज और लाभ, पूंजीवादी उत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत सृजन किए हुए अधिशेष मूल्य के ही हिस्से हैं। इन सभी का श्रोत मजदूरों के शोषण में ही है। उद्यमी, जो अपनी भूमि, इमारतों और मुद्रा पूंजी का स्वयं मालिक है, अधिशेष मूल्य के तीनों हिस्सों को अपने पास रखता है।

20. वाणिज्यिक लाभ क्या है?

व्यापारी पूंजीपति के द्वारा प्राप्त लाभ अर्थात जिसे पण्यों के वितरण (विक्रय) के द्वारा प्राप्त यिा जाता है।

21. वाणिज्यिक लाभ का श्रोत क्या है?

मूल्य का सृजन केवल उत्पादक श्रम की प्रक्रिया के अंतर्गत किया जाता है, और अधिशेष मूल्य का सृजन केवल रम के द्वारा पूंजीवादी उत्पादन प्रक्रिया में किसी मूल्य का सृजन नहीं किया जाता।

वाणिज्यिक लाभ का श्रोत (एवं वितरण में संलग्न सृजन किये हुए अधिशेश मूल्य में निहित होता है। उत्पादन में संलग्न पूंजीपति अपने तैयार पण्यों को वितरण में संलग्न पूंजीपति को उनके मूल्य से नीची दर पर बेचता है और तिरक वाणिज्यिक लाभ लेकर उन्हें उनके मूल्य पर फिर बेच देता है।

22. पूंजीवाद के अनतर्गत उत्पादन का प्रेरक क्या है?

लाभ।

प्रत्येक पूंजीवादी 'फर्म' लाभ की अधिकतम राशि प्राप्त करने का प्रयास करती है।

23. निम्नलिखित विश्लेशण की समीक्षा करो :

''अगर पूंजीवादी बाजार में किसी विशेश पण्य की कमी होती है, तो कीमतें और मुनाफे उत्पादन के उस क्षेत्र में औसत से बढ़ जाते हैं। इसलिए पूंजीपति इस अत्यधिक लाभकारी पण्य का उत्पादन तब तक बढ़ाते रहते जब तक यह कमी पूरी नहीं हो जाती।

इस प्रकार किसी पूंजीवादी बाजार में किसी खास पण्य की बहुतायत होती है तो उत्पादन के उस क्षेत्र में कीमतें और मुनाफे का तब तक उत्पादन घटाते रहते हैं जब तक यह बहुतायत खत्म नहीं हो जाती।

इस प्रकार लाभ का प्रेरक स्वचालित रूप से उत्पादन को मांग के अनुसार नियमित करता रहता है।''जो मांग लाभ के प्रेरक की क्रिया द्वारा सन्तुष्ट की जाती है। वह आम जनता की जरूरतों को पूरा नहीं करती बल्कि जिसको प्रभावी मांग कहते हैं, उसे पूरा करती है अर्थात जिस मांग को उस मुद्रा–धन से नापा जाता है जिसे उपभोक्ता अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए खर्च करने के लिए सक्षम और इच्छुक होते हैं।

अगर किसी पूंजीवादी देश की संपूर्ण जनसंख्या सड़कों पर रोटी के लिए प्रदर्शन करे, तो भी रोटी के लिए तब तक प्रभावी मांग पैदा नहीं होी जब तक लोगों के पास विक्रेताओं से रोटी खरीदने के लिए पर्याप्त मुद्रा–धन है। इसलिए, यद्यपि बहुत समय से पूंजीवादी ब्रिटेन में रिहायशी मकानों की कमी चली आ रही है, पूंजीवादी बिल्डिंग फर्में अपने उोग के संसाधनों का उपयोग श्रमिक जनता के लिए मकान और फ्लैट बनाने के लिए नहीं करती है बल्कि उनका इस्तेमाल दफ्तरों की इमारतों के निर्माण के लिए करती है जो चाहे वर्षों तक खाली पड़ी रहे। वे ऐसा इसलिए करती है क्योंकि इन इमारतों का निर्माण अधिक लाभप्रद है यद्यपि उनकी सामाजिक आवश्यकता अपेक्षाकृत है।

केवल समाजवादी समाज में, जहां लाभ के प्रेरक का उन्मूलन कर दिया जाता है और उत्पादन का सचेतन रूप से नियोजन किया जाता है, उत्पादन को जनता की जरूरतों की पूर्ति की दिशा में मोड़ा जा सकता है।

कक्षा तीन : पूंजीवाद की कार्य पद्धति (भाग–2)

1. पूजी का संचय क्या है?

अधिशेष मूल्य का नई पूंजी में रूपान्तरण।

यदि शोषण की दर में भी कोई परिवर्तन नहीं होता, पूंजी के संचय के द्वारा शेषित मजदूरों की संख्या में वृद्धि हो सकती है और इा प्रकार संबद्ध पूंजीवादी फर्म के द्वारा प्राप्त कुल अधिशेश मूल्य में वद्धि हो जाती है।

2. पूंजी के संचय के द्वारा स्थापित उत्पादन के लिए साधन पुरानों की तुलना में अधिक मशीनों का उपयोग करते हैं। ऐसा करने वाली फर्म को इससे क्या फायदे होते हैं?

इससे उत्पादकता बढ़ती है क्योंकि मशीनों का ज्यादा उपयोग फर्म को (जब तक उसकी प्रतिद्वंद्वी फर्मों पर तकनीकी बढ़त कायम रहती है) औसत से अधिक मुनाफा कमाने का मौका मिलता रहता है।

नोट : हम निरंतर पूंजी (कारखाना आदि) के परिवर्तन पूंजी (वेतन) से अनुपास को पूंजी की जैविक रचना कहते हैं। इसलिए **पूंजी की जैविक रचना** में निरन्तर वृद्धि की प्रवृत्ति पाई जाती है।

3. पूंजी का संकेन्द्रण क्या है?

व्यक्तिगत पूजियों (अर्थात व्यक्तिगत फर्मों) का वृहत्त इकाइयों में परिवर्तन। पूंजी का संकेन्द्रण पूंजी के संघ की प्रक्रिया का नतीजा है।

4. यदि पूंजी के संचय और मशीनीकरण को एक तरफ रख दे तो पूंजीवादी फर्म और किस उपाय द्वारा अपने मुनाफों में वृद्धि कर सकती है?

ऐसा केवल वह अपने मजदूरों में प्रत्येक से प्राप्त होने वाले अधिशेष मूल्य की राशि को बढ़ा कर ही कर सकता है, उदाहरणार्थ :

(1) उनके वेतनों में कटौती करके (कीमतों में वृद्धि को अनुमति देकर जब कि वेतनों का यथावत रखकर उनमें वास्तविक कटौती हो जाएगी)।

(2) काम के घंटे बढ़ाकर किन्तु तदनुसार वेतनों में वृद्धि को रोक कर ;

(3) कार्य की सघनता बढ़ाकर जैसे कार्य की मात्रा के अनुसार वेतन देना (जिसमें पगार को अत्पादन से जोड़ते हैं, ''गति तेज करते समय और गति की जांच (ऐसे कार्यों को रोकना जो उत्पादन में योगदान नहीं करते) इत्यादि।

5. श्रम और पूंजी में हित संघर्ष का कया आधार है, जिसे मार्क्सवादी लेनिनवादी 'वर्ग संघर्ष' कहते हैं?

दोनों वर्गों के बीच में इस मूल्य के विभाजन का प्रश्न, जिसका सृजन श्रमिक करते हैं लेकिन जिसे श्रमिक वर्ग (वेतन) और पूंजीपति वर्ग (अधिशेष मूल्य) के बीच में बांट दिया जाता है। पूंजी के संचय और मशीनीकरण को एक तरफ रखकर ऊंचे मुनाफों को मजदूरों के जीवन और कार्य की दशाओं की कीमत पर ही प्राप्त किया जा सकता है और श्रमिकों के जीवन और कार्य की दशाओं में सुधार मुनाफों की कीमत पर ही लाया जा सकता है।

इसलिए मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच में आर्थिक हित का बुनियादी संघर्ष है। कभी यह संघर्ष धरातल के नीचे दबा होता है तो कभी यह हड़ताल और ताबंदी की शक्ल में आग की लपटों की तरह भड़क उठता है। पूंजीवादी समाज में वर्ग संघर्ष अन्तर्निहित है। दमन की नीतियों से इसे सिर्फ कुछ समय तक काबू में किया जा सकता है। इसका अंत तभी होगा जब पूंजीपतियों और पूंजीवाद का अंत हो जाएगा।

6. आर्थिक मंदी के बुनियादी कारण क्या हैं?

पूंजीवाद के अन्तर्गत उत्पादन का अनियोजित, अराजक चरित्र, जिसमें प्रत्येक फर्म अपने उत्पादन की योजना बनाती है और आशा करती है कि आधिकतम मुनाफे कमाए जाएं। इसके साथ ही यह तथ्य भी है कि मजदूर वर्ग (जो विकसित पूंजीवादी देशों की जनसंख्या का बहुसंख्यक वर्ग है) को इतने कम वेतन दिए जायं जिससे वे उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने में समर्थ न हों जिनका वे उत्पादन करते हैं।

पूंजी के अन्तर्गत उत्पादन का अनियोजित, अराजक चरित्र,, जिसमें प्रत्येक 'फर्म' अपने उत्पादन की योजना बनाती है और आशा करती है कि अधिकतम मुनाफे कमाए जाएं। इसके साथ ही यह तथ्य भी है कि मजदूर वर्ग **(जो विकसित पूंजीवादी देशों की जनसंख्या का बहुसंख्यक वर्ग है) को इतने कम वेतन दिए जाएं जिससे वे उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने में समर्थन हों जिनका वे उत्पादन करते हैं।)**

इसलिए कुछ समय बाद गोदामों में अननिका माल भारी मात्रा में इकट्ठा हो जाता है और उत्पादक फर्मों को 'आर्डर' बहुत कम मिलते हैं। फलतः पूंजीपति अपने उत्पादन में कटौती करते हैं और मजदूरों को पार्टटाइम काम देते हैं या नौकरी से बर्खास्त कर देते हैं। इस कारण मजदूर वर्ग भी खरीदने की शक्ति और भी कम जो जाती है। 'आर्डर' और भी घट जाते हैं और संपूर्ण प्रणाली मंदी या आर्थिक संकट का शिकार हो जाती है। आम जनता में बेरोजगारी फैलती है और बैंकों और फर्मों को दिवालिया घोषित किया जाता है।

जब उत्पादन का स्तर नीचे गिर जाता है (अक्सर तब उल्लिखित उत्पादन को नष्ट कर दिया जाता है) तो जनसंख्या के लिए कुछ आवश्यक वस्तुओं की न्यूतम मात्रा के लिए आर्डर आने फिर शुरू होते हैं। फलतः पूंजीपति कुछ श्रमिकों को फिर काम पर लगा देते हैं, मजदूरों की क्रयशक्ति फिर बढ़ती है, उत्पादक फर्मों को नए आर्डर प्राप्त होते हैं। प्रणाली में पुरुद्धार शुरू होता है, जिसके बाद विस्तार (बूम) का काल आता है और जिसके शिखर पर पहुंचने पर सापेक्ष अति उत्पादन का नया संकट प्रारंभ होता है– पूंजीवादी प्रणाली में विस्तार संकुचन का दुष्चक्र जारी रहता है।

'विस्तार' (बूम) और 'संकुचन' (स्लम्प) के आवागमन को पूंजीवादी 'व्यापार चक्र' (ट्रेड सायकिल) कहते हैं।

7. पूंजी का केन्द्रीयकरण क्या है?

पूंजी के निमंत्रण का क्रमशः थोड़े और थोड़े हाथों में केन्द्रित हो जाना।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अपेक्षाकृत फर्म को छोटी फर्म की तुलना में अनेक महत्वपूर्ण फायदे और सुविधाएं हैंः वृहत्तर पूंजी संसाधन और रिजर्व, तकनीकी रिसर्च के लिए अधिक अच्छे अवसर, कच्चे माल को खरीदने की ज्यादा क्षमता उत्यादि। इसलिए संमुचन (टलम्प) के वक्त छोटी फर्मों की निरंतर प्रवृत्ति होती है कि वे छोटी फर्मों पर कब्जा कर लें।

पूंजी का संकेन्द्रण और केन्द्रीयकरण पूंजीवाद के चरित्र में गुणात्मक परिवर्तन लाता है। **प्रतियोगी पूंजीवाद** के स्थान में **एकाधिकारी पूंजीवाद** की स्थापना हो जाती है।

8. एकाधिकार या इजारेदारी क्या है?

फर्म या फर्मों का संघ, जिसके पास **एकाधिकार की शक्ति** है अर्थात जो किसी पण्य की जो किसी पण्य की बाजार में, इतनी अधिक मात्रा पर नियंत्रण करता है कि प्रतियोगी बाजार का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

9. किन पूंजीपतियों के पास एकाधिकार शक्ति है, उसके उन्हें क्या लाभ हैं?

एकाधिकारी फर्म अपने पण्यों की कीमतें उच्चतर स्तर पर निश्चित कर सकती है। ऐसा वह प्रतियोगी बाजार में नहीं कर सकती जहां कीमतों का निर्धारण प्रतियोगिता के द्वारा होगा। एकाधिकारी अपने पण्यों को उनके मूल्य से ऊपर की कीत पर बेच सकता है। वह इस प्रक्रिया को अपना उत्पादन सीमित करके और आगे बढ़ा सकता है। इसलिए एकाधिकारी की स्थितियों में कमी संभव नहीं है।

10. एकाधिकार के तीन रूप हैं:

(1) टस्ट, (2) कंबाइन या (3) कार्टल। इनमें प्रत्येक की क्या विशेशताएं हैं?

'ट्रस्ट' एक अकेली विशाल 'फर्म' है जिसके पास एकाधिकारी शक्ति है जैसे इंपीरियल कैमिकल इंडस्ट्रीज।

कंबाइन उद्योगों का समूह है जिस पर एकल नियंत्रण है और किसके पास एकाधिकारी शक्ति है, जैसे 'यूनीलिवर'। 'कंबाइन' पर नियंत्रण साधारणतः **होल्डिंग कंपनी** के माध्यम से किया जाता है जिसका अस्तित्व दूसरी कंपनियों के शेयरों को रखने के लिए किया जाता है।

'कार्टेल' या 'रिंग' अलग अलग फर्मों का संध होता है जो आपस में, समझौते के द्वक्षरा, प्रतियोगिता को इसलिए सीमित कर देते हैं जिससे वे एकाधिकारी शक्ति के लाभ उठा सकें। उदाहरण के लिए काटेल सहयोगी फमों के लिए उत्पादन कोटा और बाजार के शेयर निर्धारित कर दे अथवा अपने पण्यों के लिए सर्वानुमति से कीमतों के बारे में सहमति कर ले। एक अंतर्राष्ट्रीय कार्टेल का उदाहरण आगैनेजाइशन आफ पेट्रोलियम एक्सपोर्टिं कंट्रीज (ओपेक) है।

12. वित्त पूंजी क्या है?

जैसे पूंजीवाद विकसित होता है, पूंजी का संकेन्द्रण और केन्द्रीयकरण बैंकिंग और उद्योग दोनों में जारी रहता है तथा बैंक और औद्योगिक पूंजी का परस्पर विलय हो जाता है, जिससे एकाधिकारी पूंजीपतियों का एक छोटा गुट एक **वित्तीय अल्पतंत्र** – विशाल बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं एवं विशाल आद्योगिक फर्मों का नियंत्रण करने लगता है। मिलीजुली बैंक औ औद्योगिक पूंजी को **वित्तीय पूंजी** कहते हैं।

13. हमने देखा है कि सभी देशों के पूंजीपतियों को बाजार की समस्या का सामना करना पड़ता है। वे इस समस्या का समाधान करने का प्रयास कैसे करते हैं?

'सिद्धांत में' वे वस्तुतः इसका समाधान मजदूरों के वेतन बढ़ाकर कर सकते हैं वस्तुतः जिससे वे उनके द्वारा उत्पादित पण्यों के मूल्य के बराबर हो जाएं किन्तु यह उनके लाभ को घटाकर शून्य कर देगा, पूंजीपति इस समाधान को अस्वीकार कर देते हैं। फलतः वे अपनी निरन्तर जारी बाजार समस्या का हल करने की कोशिश पण्यों के निर्यात के द्वारा करते हैं। चूंकि, सभी विसित पूंजीवादी देशों के सामने बाजार को समस्या होती है, इसलिए प्रत्येक विकसित देश अपने पण्यों का निक्ति खासकर कम विकसित देशों में करने का प्रयत्न करता है।

14. पण्यों के नियति की प्रवृत्ति पूंजी के निर्यात तथा उपनिवेशवाद की दिशा में क्यों ले जाती है?

क्योंकि अल्पविकसित देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता है उसकी जनसंख्या आमतौर से गरीब होती है। इसके अतिरिक्त, उसकी अर्थव्यवस्था आत्म केन्द्रित (अर्थात सापेक्ष रूप से अपने में संकुचित) होती है फलतः अल्पविकसित देश विकसित पूंजीवादी देश`क अतिरिक्त माल की खपत के लिए अच्छा बाजार नहीं होता जब तक उसकी अर्थव्यवस्था में बुनयादी रूपान्तरण न कर लिया जाए।

यह एक कारण है जिससे पूंजीवादी फर्में विकसित पूंजीवादी देशों से ऐसे अल्पविकसित देशों को 'पूंजी का निर्यात' करती है अर्थात पूंजी का निवेश भूमि के विशाल क्षेत्रों को प्रज्ञत करने के लिए और उन्हें बागानों और खदानों में परिवर्तित करने के लिए करती है। वे अल्पविकसित देश में सस्ते तैयार माल की बात ले आते हैं जो उस देश के दस्तकारों का (जो अभी भी हस्तशिल्प पद्धति का उपयोग करते हैं) सर्वनाश कर देते हैं। और गर वे अल्पविकसित देश के प्रशासन का नियंत्रण करते हैं– इस प्रक्रिया को उपनिवेशवाद के रूप में जाना जाता है– तो वे किसानों के एक विशाल भाग को उनकी परंपरागत जमीन से वंचित कर देते हैं (उदाहरणार्थ, वे उन पर मुद्रा धन के रूप में कर लगाते हैं जिनहें केवल वेतनों` द्वारा दिया जा सकता है)।

इन बर्बाद दस्तकारों और भूमिहीन किसानों को रोजगार के लिए इतनी कम पगार पर विदेशियों के स्वामित्व में स्थापित खदानों और बागानों में जाना पड़ता है जिससे उनकी भूख भी शान्त नहीं होती। इनमें विकसित पूंजीवादी देश के लिए सस्ते कच्चे माल और खाद्य पदार्थों का उत्पादन किया जाता है जिससे इन फर्मों के बड़ी ऊंची दर पर मुनाफे प्राप्त होते हैं। यह पूंजी के निर्यात का दूसरा बहुत महत्वपूर्ण कारण है। इसी के

साथ साथ, ये उपनिवेश विकसित पूंजीवादी देश को अपने अतिरिक्त तैयार माल के लिए बाजार सुलभ कराता है– इस बाजार को सीमा करों या अन्य व्यापारिक प्रतिबंधों के द्वारा अन्य पूंजीवादी देशों के लिए वर्जित किया जा सकता है।

उपनिवेश का एक महत्व यह भी है कि विकसित पूंजीवाद देश इसका उपयोग सैनिक अड्डे के रूप में नए क्षेत्रों में विस्तार के लिए भी कर सकता है।

15 विशाल लाभ क्या है?

अधिशेश मूल्य जिसे पूंजीपति वर्ग अपने देश से बाहर के मजदूरों के शोषण के द्वारा प्राप्त करता है, खासकर अल्पविकसित उपनिवेश जैसे देशों से यहां सभ्यता का स्तर (और इसलिए श्रम शक्ति का मूल्य) विकसित पूंजीवादी देश की अपेक्षा नीचा होता है, जिससे मुनाफे की दर (अक्सर बहुत ज्यादा) ऊंची होती है।

16 उपनिवेश क्या है?

औपनिवेशिक प्रणाली का देश जिसका प्रशासन विकसित पूंजीवादी देश प्रत्यक्ष रूप से करता है (जैसे हांगकांग)।

17. अर्थ उपनिवेश क्या है?

एक देश जो नाम मात्र के लिए स्वतंत्र है लेकिन वास्तव में किसी विदेशी शक्ति पर निर्भर है (जैसे सऊदी अरब)।

18. कुछ लोग दावा करते हैं कि विकसित देश का मजदूर वर्ग औपनिवेशिक पद्धति के देशों के शोषण में हिस्सेदार होता है क्या यह सच है?

नहीं! औरपिवेशिक देशों की श्रमिक जनता के शोषण से प्राप्त विशाल लाभ संबद्ध विकसित पूंजीवादी देशों के एकाधिकारी पूंजीपतियों को मिलते हैं। जबकि इन विशाल लाभों का एक छोटा हिस्सा रिश्वत के रूप में ऊंचे वेतन वाले श्रमिकों के एक नक्शे को (मुख्तः मजदूर आंदोलन के उन अधिकारियों को जो एकाधिकार पूंजी के एजेंट के रूप में काम करते हैं) दिया जाता है, मजदूरों का सामूहिक रूप से उनके वेतनों के रूप में उनकी श्रम शक्ति का मूल्य ही प्राप्त होता है और इसलिए विशाल लाभों में उनका कोई हिस्सा नहीं होता।

इस तथ्य से कि ब्रिटिश मजदूरों का जीवन स्तर पिछले सौ वर्षों में ऊपर उठा है यह साबित नहीं होता कि उन्हें अपने श्रम शक्ति के मूल्य से अधिक वेतन मिलते हैं बल्कि सच यह है कि **उनकी श्रम शक्ति के मूल्य में वृद्धि हुई है।** औरपिवेशिक देशों से प्राप्त विशाल लाभों का एक प्रमुख हिस्सा पूंजी के संचय में लाभ और उत्पादन का मशीनीकरण किया गया। इसलिए उत्पादकता में वृद्धि हुई और 'सभ्यता' के स्तर में भी जो श्रम शक्ति के मूल्य के निर्धारण में योगदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, पिछली सदी में सकल उत्पाद में भारी वृद्धि हुई और मजदूर वर्ग को इसका छोटा हिस्सा बढ़े हुए वास्तविक वेतनों के रूप में दे दिया गया। इसके बावजूद, सकल उत्पाद में मजदूर वर्ग के हिस्से में कमी आई, जिससे **ब्रिटिश मजदूर वर्ग के शोषण की मात्रा में इस काल में वृद्धि हुई है।**

19. औपनिवेशिक पद्धति के देश का आर्थिक रूपान्तरण संबद्ध विकसित पूंजीवादी देश के लिए उसकी उपयोगिता को सीमित कर देते हैं, ऐसा कैसे होता है?

एकाधिकारी पूंजीपतियों को सुसुखिक्षित स्थानीय लोगों के एक तबके की जरूरत पड़ती है जो सरकारी अधिकारी और कर्मचारी के रूप में उनकी सेवा कर सके और ये लोग इस तथ्य से बहुत हताश हो जाते हैं कि सभी उच्च पद उस देश पर प्रभुत्व रखने वाले विदेशी शासन के प्रतिनिधि होते हैं।

यद्यपि विदेशी एकाधिकारी पूंजीपति औपनिशिक देश के पूंजीवादी विकास को सीमित रखने का प्रयास करत हैं, उन्हें रेल मार्गों, बंदरगाहों की जरूरत पड़ती है जिससे वे उस देश के कचचे माल और खाद्य पदार्थ को बाहर निकाल सकें। इससे **एक राष्ट्रीय पूंजीवादी वर्ग** या **राष्ट्रीय बुर्जुआजी** के विकास में मदद मिलती है जो, यद्यपि विदेशी शक्ति के प्रभुत्व के कारण कई मानों में हताश रहता है (ये निराशाएं राष्ट्रीय बुर्जुआजी की राजनीतिक चेतना बढ़ाने में सहायक होती हैं) स्वदेशी पूंजीवादी उद्योग को कुछ मात्रा में विकसित करता है जो

विकसित पूंजीवादी देश के निर्यातित उद्योगों से प्रतिस्पर्धा करता है। वह एक औद्योगिक मजदूर वर्ग का सृजन भी करता है, जो आकार में छोटा लेकिन सापेक्ष रूप से संकेन्द्रित होता है, यह स्वाभाविक रूप से मजदूर आन्दोलन को जन्म देता है, जो ऊंची पगार और बेहतर जीवन दशाओं के लिए संघर्ष शुरू करता है।

कुछ समय के बाद इन सभी कारकों के द्वारा **एक राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन** का उदय हाता है, जिसका उद्देश्य औपनिवेशिक पद्धति के देश को विदेशी एकाधिकारी पूंजीपतियों के प्रभुत्व और शोषण से मुक्त करना होता है।

20. विदेशी एकाधिकारी पूंजीपति रोष्टीय मुक्ति आन्दोलन के प्रति क्या रुख अपनाते हैं?

सबसे पहले, वे ताकत के द्वारा उसे दबाने का प्रयास करते हैं।

दूसरे जब राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की बढ़ती हुई ताकत बल प्रयोग द्वारा उसका दमन असंभव कर देती हैं, तो वे उसे प्रभावहीन करने के लिए स्थानीय राजनीतिज्ञों के एक गुट को नाममात्र की शक्ति का हस्तान्तरण कर देते हैं। इस गुट को जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों में से चुना जाता है जो उन पर निर्भर हो ते हैं। इस प्रकार उपनिवेश का रूपान्तरण नव उपनिवेश में जब उपनिवेश में हो जाता है– एक देश जो पहले उपनिवेश था किनतु अब अध–उपनिवेश है (जैसे जॉर्डन)।

21 साम्राज्यवाद क्या है?

साम्राज्यवाद एकाधिकारी पूंजीवाद या वित्तीय पूंजीवाद का ही एक दूसरा नाम है।

पूंजीवादी समाज जब साम्राज्यवाद क चरण में विकसित होता हैः (1) पूंजी का संकेन्द्रण और केन्द्रीयकरण उस बिन्दु तक विकसित हो गया है जब उसने ऐसे एकाधिकारों का सृजन किया है जो आर्थिक जीवन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

(2) बैंक और आद्योगिक पूंजी का विलय उस बिन्दु तक विकसित हो गया है जब उसने वित्तीय पूंजी के आधार पर एक वित्तीय अल्पतंत्र का सृजन कर दिया है।

(3) पण्यों के निर्यात से अतिरिक्त पूंजी का निर्यात अब अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

वैश्विक पैमाने पर हमें नोट करना चाहिए **अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवादी एकाधिकारों** को और इस तथ्य को कि 1914 तक **सभी अल्प विकसित देशों को किसी न किसी साम्राज्यवादी शक्ति के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत शामिल कर लिया गया था,** जिससे आगे साम्राज्यवादी विस्तार सिी अन्श साम्राज्यवादी शक्ति की कीमत पर ही संभव था।

कक्षा चार : राज्य तथा समाजवाद का मार्ग

1. राज्य क्या है?

जैसा हमने कक्षा एक में पढ़ा, यह सार रूप से शक्ति का मंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक वर्ग संपूर्ण जनता पर शासन करता है।

2. सम सामयिक ब्रिटिश राज्य के मुख्य शासनांग क्या है?

राजा, लार्ड सभा, कामन्स सभा, न्यायपालिका, कारागार सेवा, सैन्य बल, नागरिक सेवा, रेडिया और टेलीविजन सेवा, चर्च आफ इंग्लैंड, राष्ट्रीयकृत उद्योग, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा।

3. राज्य के कौन से कुंजी शासनांग क्या हैं?

सैन्य बल और पुलिस। ऐसा इसलिए है क्योंकि राजनीति में बुनियादी मुद्दा हमेशा भौतिक शक्ति है न कि कागज के टुकड़े, और सैन्य बल और पुलिस (जो सहायक सैनिक शक्ति है) के पास ही राज्य की भौतिक शक्ति होती है।

4. इस कथन के अर्थ की व्याख्या कीजिए ''संसदीय लोकतंत्र'' एक झूठा दिखावा है जे पूंजीपति वर्ग की तानाशाही पर पर्दा डालता है।

ब्रिटिश संवैधानिक कानून के अनुसार सर्वोचच सत्ता कामन्स सभा में निहित नहीं है (शासनांग जिसका 'संसदीय लोकतंत्र' से मुख्य संबन्ध है) बल्कि 'संसद का निर्वाचित सदन) की विद्यार्थी शक्ति पर अधिकांश मामलों में लार्ड सभा का और विधायन न्यायपालिका की 'व्याख्या' के अधीन है और उसका क्रियान्तवयन नौकरशाही के प्रधानों के सहयोग द्वारा ही संभव है।

तथापि राजतंत्र, लार्ड सभा, न्यायपालिका और नौकरशाही के प्रधानों का किसी प्रकार से भी लोकतांत्रिक निर्वाचन नहीं होता। इनके पद पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों के लिए (तथा अभिजात वर्ग के लिए भी जिसका अब पूंजीपति वर्ग में विलय हो चुका है) सुरक्षित रहते हैं।

इसके अलावा सैन्य बलों के प्रधानों (और सेना राज्य का कुंजी शासनांग है) का चयन भी उच्च वर्ग से होता है और उनकी निष्ठा रानी के प्रति होती है न कि जनता या कामन्स सभा के प्रति। इसलिए उनका उपयोग हमेशा रानी के नाम से पूंजीपति वर्ग की ओर से संविधान की रक्षा के लिए किया जा सकता है।

5. कल्पना करो कि तुम्हारी पार्टी– ईमानदार सोशलिस्टों की पार्टी ने आम चुनाव में कामन्स सभा में बहुमत प्राप्त कर लिया है। तुम संवैधानिक रूप से समाजवाद का लागू करने के लिए क्या कदम उठाओगे?

इस तरह का प्रश्न पूंछने के लिए भी काफी कल्पना की जरूरत है। इस बिन्दु तक मतदाताओं की राय के विकास के लिए और ऐसे चुनाव परिणाम के आने के लिए अभी बहुत समय लगेगा और पूंजीपति वर्ग भी इस नतीजे की संभावना से अपरिचत नहीं होगा। चूंकि यह वर्ग निश्चित रूप से अपनी धन संपत्ति और शोषण के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रत्येक हथियार का प्रयोग करेगा हालांकि वह अपनी संपूर्ण ताकत का उपयोग स्वतंत्रता और ईसाई सभ्यता की रक्षा के नाम पर करेगा, चुनाव से पहले ही वह ऐसे कदम उठाएगा (निर्वचन कानूनें और चुनाव क्षेत्रों की सीमाओं परिवर्तन, तुम्हारी पार्टी को व्यवस्था विरोधी घोषित कर उस पर प्रतिबंध इत्यादि) जिससे वह इस आपत्तिजनक और शर्मनाक परिणाम को रोक दे।

अनुमान कीजिए कि किसी आश्चर्यजनक मूर्खता की वजह से पूंजीपति वर्ग निवारणात्मक कदम उठाने में असफल रहता है।

तुम्हारी पार्टी तब आशा कर सकती है कि रानी उसे नेता को सरकार बनाने के लिए बुलाएगी। बहुत से से परंपरा रही है कि राजा उस दल के नेता को प्रधान मंत्री नियुक्त करता है जिसका कामन्स सभा में बहुत होता है परन्तु ऐसा करना उसका संवैधानिक कर्तव्य नहीं है।

तथापि कल्पना कीजिए कि वह ऐसा कदम उठाती है और तुम्हारे पार्टी का नेता अपनी संभावित कैबिनेट चुनता है। पद ग्रहण करने से पूर्व संविधान के अनुसार मंत्रियों को रानी के प्रति निष्ठा की शपथ लेना जरूरी है। चूंकि तुम्हारी पार्टी के चुनाव कार्यक्रम में राज्य के लोकतंत्रीकरण और आलेकतांत्रिक राजतंत्र के उन्मूलन को शामिल किया गया होगा। इन मंत्रियों को झूठी शपथ के आरोप में गिरफ्तार किया जा सकता है। जब काफी संख्या में तुम्हारे संसद सदस्यों को कानूनी ढंग से जेल में बंद कर दिया जाएगा, तो तुम्हारी पार्टी सदन में बहुमत नहीं रहेगा।

इसलिए एक अन्य आश्चर्य की कल्पना कीजिए कि पूंजीपति वर्ग तुम्हारी पार्टी की सरकार को पद ग्रहण से इस संवैधानिक तरीके से न रोकने की मूर्खता करता है और तुम्हारी सरकार उत्पादन के प्रमुख साधनों के सामाजीकरण के लिए वेधेयक पेश करती है।

इस विधेयक को पारित करने के लिए लार्ड सभा और रानी की अनुमति जरूरी है (रानी उसे अनिश्चितकाल तक रोक सकती है) जिससे अन्य आश्चर्यों की कल्पना करनी पड़ेगी और तभी तुम्हारे समाजवादी कार्यक्रम को कानूनी स्वीकृति मिल सकेगी।

पूंजीपति न्यायालयों से अपील कर सकते हैं कि वे ऐसे विधायन की गैरकानूनी घोषित कर दें और यह भी आश्चर्य की बात होगी कि उच्च वर्गीय न्यायाधीश समाजवादी सरकार के पक्ष में निर्णय दें।

इसके अलावा समाजवादी विधायन को क्रियान्वित करने के लिए सिविल सर्विस के प्रधानों के सहयोग की जरूरत है। इन अफसरों का चयन भी उच्च तर्ग से हाता है। इसलिए इनका सहयोग प्राप्त करना एक अन्य आश्चर्य की बात होगी।

इनके अलावा भी हमें एक अन्य हाश्चर्य की कल्पना करनी पड़गी। संविधान के अनुसार सैन्य बल जिनके प्रधान भी उच्च वर्ग से आते हैं– राजा के आदेश पर 'मार्शल लॉ' जारी कर यह बात कि प्रतिक्रियावादी सैनिक विप्लव सुदूर विदेशों की ही घटनाएं नहीं हैं 1914 के कारागार विद्रोह (Carragh Mutiny) से सिद्ध हो जाती है, जिसकी वजह से अल्सटर को आयरलैंड से अलग करना पड़ा। इसलिए हमें एक अन्य आश्चर्य की कल्पना करनी पड़ेगी कि राजा और सैन्यबल इस मामले में निश्क्रिय बने रहेंगे।

इतने असंख्य आश्चर्य वास्तविक जीवन में कभी नहीं होते इसलिए यह स्पश्ट है कि समाजवाद के लिए संवैधानिक परिवर्तन की धारणा बिल्कुल बेतुकी है।

6. रानैतिक दल क्या है?

एक संगठन जो किसी सामाजिक वर्ग (या उस तर्ग के किसी अनुभाग) के राजनैतिक हितों का प्रतिनिधित्व करता है।

ब्रिटिश संसदीय प्रणाली को 'बुनियादी तौर से दो दलों की प्रभाली' बताया गया हैं इसका क्या महत्व है?

इस प्रणाली का निर्माण निर्वाचक मंडल को चुनाव में दो बड़े दलों में से एक का चयन करने के लिए हुआ है। दोनों संसदीय दल (अर्थात प्रत्येक दल के संसदीय सदस्य) घोषणा करते हैं कि वे दल की कान्फ्रेंस के निर्णयों से बंधे हुए नहीं हैं। दोनों ही पूंजीवादी समाज का समर्थन करते हैं। इसलिए चुनाव के बाद एक दल हर मैजेस्टी की सरकार बनाता है और दूसरा दल हर मैजेस्टी का विपक्ष माना जाता है। जब कुछ समय के बाद, निर्वाचकों का बहुमत एक दल की सरकार से असंतुष्ट हो जाता है, तो उसके स्थान में दूसरा दल अगले चुनाव में पूंजीवादी प्रणाली में किसी तरह की गड़बड़ किए बगैर अगली सरकार बना लेता है।

यह प्रणाली छोटे दलों के सामने जानबूझकर बड़ी बाधाएं खड़ी करता हैः जब कोई उम्मीदवार कुल मतों का एक निर्धारित अनुपात पाने में असफल रहता है तो उसकी भरी जमानत जब्त हो जाती है। अनुपातिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली नहीं है जिससे यह संभव है कि एक पार्टी राष्ट्रीय मतों का 49 प्रतिशत प्राप्त कर ले, फिर भी उसका संसद में एक सदस्य भी न चुना जाए। टेलिविजन प्रचार की सुविधा केवल उन्हीं को दी जाती है जो एक निश्चित संख्या में प्रत्याशी किसी एक को वोट देते हैं जिसे वे अपेक्षाकृत कम खराब समझते हैं क्योंकि

वे मानते हैं कि दोटी पार्टी जिसका वे सरकार बनाने के लिए वास्तव के समर्थन करते हैं उनके वोट को बर्बाद कर देगी और ऐसा करने से वे मतदान में विभाजन द्वारा अपेक्षाकृत ज्यादा खराबी पार्टी को चुनाव जीतने में मदद करेंगे। ब्रिटिश संसदीय प्रणाली का ढांचा साफतौर से इस तरह का बनाया गया है, जैसा मार्क्स ने कहा था कि **उसके द्वारा निर्वाचक मंडल को केवल इस बात का चयन करने का अधिकार है कि वह निश्चित करे कि अगले पांच वर्षों के लिए पूंजीवादी राजनेताओं के किस गुट को उनका झूठा प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलेगा।**

10 इस कथन का विश्लेशण करोः "ब्रिटेन का राज्य लोककल्याणकारी राज्य है।"

पहले यह याद रखना चाहिए कि सामाजिक सेवाओं का उद्‌गम पूंजीपतियों के हृदय में श्रमजीवी जनता के लिए माननीय चिन्ता के कारण नहीं हुआ बल्कि मजदूर बस्तियों से बीरियों के उच्च वर्गीय निवास स्थानों तक फैलने की वजह से हुआ और इस खोज के कारण हुआ कि बोअर युद्ध के समय 50 प्रतिशत श्रमिक वर्गीय रंगरूट फौज में सैनिक सेवा के लिए डॉक्टरी जांच में आयोग्य पाए गए।

इसलिए, अनुभव ने पूंजीपति वर्ग को बहुत पहले यह समझने के लिए मजबूत कर दिया कि राज्य को, उनके शासन के यंत्र के रूप में, सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में इतना कार्य करना चाहिए जो मजदूरों के लिए न्यूनतम स्वास्थ्य को आश्वस्त कर सके जिससे वे निर्बाध रूप से उनके लिए अधिशेश मूल्य का उत्पादन कर सकें और उनके लिए युद्ध लड़ सकें।

इस सिद्धांत को स्वीकार करने के बाद पूंजीपति वर्ग का उद्‌देश्य रहा है कि सामाजिक सेवाओं का स्तर न्यूनतम आवश्यकता के बराबर रखा जाए। खासकर यह देखा जाए कि ये फायदे श्रमिक वर्ग के औसत वेतनों से बहुत म रहे और मजदूर वर्ग स्वयं अपने लिए सुलभ सामाजिक सेवाओं के खर्च का भुगतान (टैक्स और बीमा की किश्तों के द्वारा) अपने वेतनों में से कटे। उन बिन्दुओं को वस्तुतः श्रमिक वर्ग के वर्ग संघष्र ने भी प्रभावित किया है, परन्तु आंकड़े दर्शाते हैं कि औसत मजदूर वर्गीय परिवार करों तथा अन्य भुगतानों के जरिये प्राप्त सामाजिक सेवाओं की तुलना मे ंकहीं अधिक खर्च करता है। इसलिए ये सेवाएं श्रमिकों को मुफ्त नहीं मिलती बल्कि उन्हें अपनी जेबों से इसकी कीमत चुकानी पड़ती है।

11. राष्ट्रीयकरण क्या है,

राज्य द्वारा किसी उद्यम का अधिग्रहण जो पहले निजी स्वामित्व में था।

12. क्या पूंजीवादी समाज में राष्ट्रीयकरण समाजवादी कदम है? क्योंकि पूंजीवादी समाज में राज्य पूंजीपति वर्ग के शासन की मशीन है, इसलिए पूंजीवादी समाज में राष्ट्रीयकरण किसी प्रकार समाजवादी कदम नहीं है। इसका अर्थ केवल यह है कि किसी उद्योग को अकेली पूंजीवादी फर्म के स्वामित्व से लेकर **संपूर्ण पूंजीपति वर्ग के स्वामित्व में हस्तांतरित कर दिया गया है।**

अधिकतम प्रतिक्रियावादी सरकारों ने राष्ट्रीयकरण के कदम उठाए हैं, मुख्यतः संचार और ईंधन के क्षेत्र में, जो संपूर्ण पूंजीपति वर्ग की सेवा करते हैं (जैसे डाकखाना, रेलमार्ग हवाई यात्रा, गैस कोयला, बिजली, इत्यादि।)

राष्ट्रीयकरण का उद्‌देश्य इन क्षेत्रों मं संपूर्ण पूंजीपति वर्ग के लिए सस्ती और कुशल सेवा का लाभ पहुंचाना है। इसलिए राष्ट्रीयकरण को आमतौर से वहां क्रियान्वित किया जाता है जहां निजी उद्योग एकाधिकारी शक्ति का उपयोग करते हुए अन्य पूंजीवादी फर्मों से अत्यधिक ऊंची दरों पर सुविधा प्रदान करता हो या जहां निजी उद्योग पूंजीपति वर्ग के लिए आवश्यक किसी क्षेत्र में तर्क संगत रूप से कुशल सेवा प्रदान करने अब समर्थ न रहा है।

जब पूंजीवादी राज्य किसी उद्योग का राष्ट्रीयकरण करता है। तो उसके पूर्ववर्ती स्वामियों को आमतौर से उदारता पूर्वक ब्याज देने वाले राज्य के बांडों के रूप में मुावजा दिया जाता है जो उन्हें अनुमति देते हैं कि वे राज्य की गारंटी पर आधारित मुनाफों के जरिए मजदूर वर्ग का शोषण जारी रखें। वे बोर्ड जो राष्ट्रीयकृत उद्योगों के श्रमिक अपने अनुभव से भली भांति जानते हैं कि उनके अंतर्गत भी वर्ग संघर्ष जारी रहता है। पूंजीवदी राज्य से संघर्ष करना पड़ता है।

13. राज्य एकाधिकारी पूंजीवाद क्या है?

एकाधिकारी पूंजीवाद अर्थात साम्राज्यवाद के विकास के साथ साथ राज्य संपूर्ण पूंजीवादी वर्ग के शासन का यंत्र क्रमशः कम होता जाता है और वह उत्तरोत्तर एकाधिकारी पूंजीपतियों के प्रभुत्वशाली गुट के आधीन हो जाता है अर्थात् वित्तीय अल्पमत के राज तंत्र की स्थापना हो जाती है।

पूंजीवाद के विकास के साम्राज्यवादी चरण में राज्य` तंत्र का बहुत विस्तार हो जाता है। यह विस्तार उसके भौतिक खेत्र (सेना और पुलिस में हाता है तथा अर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के विनियमन के क्षेत्र में भी।

इस विस्तार का चरित्र समाजवदी नहीं होता। इसका उद्देश्य एकाधिकारी पूंजी` हितों को पूरा करना है। इसीलिए मार्क्सवादी लेनिनवादी इस विकास को राज्य एकाधिकारी पूंजीवाद का नाम देते हैं।

14. सम्रतावादी राज्य क्या है?

इस राज्य की धारणा का प्रस्ताव सर्वोत्तम दक्षिण पंथी मैथेलीक राजनेताओं ने दिया था। इसका अधिकृत उद्देश्य वर्ग संघर्श का उन्मूलन करना (तथ्य में उसका दमन करना) है। यह मजदूर संधों और उद्योगपतियों के संगठनों के बीच में स्वतंत्र सामूहिक सौदेबाजी को समाप्त करना चाहता है। समतावदी राज्य को निगमात्मक राज्य भी कहते हैं। निगमात्मक राज्य में वेतन, कार्यदशाओं आदि पर सभी आपसी वार्तालाप राजकीय निगूमें के माध्यम से होते हैं जिनके उद्योगपतियों और राज्य के प्रतिनिधियों को श्रमिकों के प्रतिनिधियों से बातचीत करनी पड़ती है।

निकट अतीत में ब्रिटिश सरकारों ने वतंत्र सामूहिक सौदेपाजी पर जो प्रतिबंध लगाए हैं उन्हं निगमात्मक राज्य की दिशा मं उठाये कदमों के रूप में देखना चाहिए, जबकि उद्योग में मजदूरों के प्रतिनिधित्व या मजदूरों क नियंत्रण के पक्ष में प्रचार को झूठा वामपंथी प्रचार समझना चाहिए सिका ध्योय निगमात्मक राज्य की स्थापना की दिशा में बढ़ना है।

15. फासीवाद क्या है?

प्रतिक्रियावादी वर्ग की खुली आतंकवादी तानाशाही आमतौर से एकाधिकारी पूंजी की तानाशाही जिसे एक अर्ध सैनिक जन राजनीतिक दल के द्वारा क्रियान्वित किया जाता है। इस नाम को फासीज या लकड़ियों के बंडल से उत्पन्न किया गया है जो रोमन साम्राज्य के ध्वज पर अंकित था जिसे इतालवी फासीवादियों ने अपनाया था।

फासीवादी पार्टी को मुख्यतः निम्न बुर्जुआ अरै भेष्ट सर्वथा मजदूर वर्ग के पतित, नीच अपराधिक तबके से आते है। इसे आर्थिक सहायता, परिस्थिति के अनुसार पूंजीपति देते हैं और फौज के अफसर इसे हथियार देते हैं लेकिन अनाधिकृत रूप से।

फासीवादी दल श्रमिक जनता के अधिकतम पिछड़े तबकों को लोकप्रिय नारों को उछाल कर लुभाने की कोशिश करता है (यह अपना नाम नैशनल सोशलिस्ट राष्ट्रीय समाजवादी रख लेता है)। यह निम्न बुर्जुआ वर्ग को भी इसी प्रकार आकृष्ट करने का प्रयास करता है (यह एकाधिकार का विरोधी होने का दावा भी करता है)। परंतु इसका मुख्य प्रचार नस्लवादी और राष्ट्रवादी पूर्वाग्रहों पर आधारित होता है। इसका कार्य बल प्रयोग क्षरा मजदूर वर्ग के संगठनों का दमन करना और संसदीय लोकतंत्र के दिखावे के स्थान में खुली तानाशाही की स्थापना स्थापित करने का प्रयास करती है (सर्वाधिकारवाद)। इस अधिनायकतम के अंतर्गत फासीवादी पार्टी (अक्सर सर्वज्ञ नेता के नाम से) प्रभुत्वशाली वर्ग के हित में शासन करती है।

16. चूंकि समाजवाद संसदीय लाकतंत्र के द्वारा स्थापित नहीं हो सकता, तो उसे किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है?

केवल समाजवादी क्रांति के द्वारा जिसके लिए जरूरी है पूंजीवादी बनाए जो राज्य की शक्ति की मशीन को नष्ट कर सके।

17. क्या ऐसी परिस्थितियां हैंजिनमें मजदूर वर्ग शानितपूर्ण ढंग से समाजवाद की सीापना कर सकता है?

ऐसा हो सकता है और हुआ है लेकिन अपवादात्मक परिस्थितियों में ही उदाहरण के लिए जहां पूंजीपति

वर्ग के पास प्रभावी राज्यतंत्र की शक्ति न हो जो मजदूर वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता हथियाने को रोकने में सक्षम हो सके (पहले विश्वयुद्ध के बाद ऐसा फिनलैंड और हंगरी में हुआ था)।

सिद्धांत में, ऐसे देश में ऐसा शान्तिपूर्ण परिवर्तन हो सकता है जहां पूंजीवादी वर्ग` पस शक्ति का राज्य तंत्र तो है लेकिन उसे विदेशी सहायता से वंचित कर दिया गया हो और उसे मजदूर वर्ग की ऐसी शक्ति की मशीन का सामना करना पड़े जो अत्यधिक शक्तिशाली हो, जिस से उसका हिंसात्मक विरोध करना पूंजीपति वर्ग के लिए निर्रथक हो जाए। ऐसी परिस्थितियों में पूंजीवादी वर्ग को शांतिपूर्ण ढंग से ख्रीदकर पदच्युत किया जा सकता।

सैद्धांतिक संभावना स्पष्ट करती है कि यदि क्रांतिकारी का तंत्र श्रमिक वर्ग का अधिक बलवान हो तो शान्ति पूर्ण संक्रमण की संभावना अधिक हो जाती है (इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता)।

कक्षा पांच : मजदूर वर्ग की पार्टी

1. सुधारवाद क्या है?

श्रमिक आन्दोलन में प्रवृत्ति जो मजदूर वर्ग के उद्देश्यों को पूंजीवादी ढांचे के अन्तर्गत आंशिक सामाजिक सुधार लाने तक सीमित करती है।

व्यवहार में सुधारवाद मजदूर र्व और पूंजीपति वर्ग के बीच में वर्ग संघर्ष की धारणा को अस्वीकार करता है और उपदेश देता है कि सामाजिक सुधारों को दोनों वर्गों के बीच में वर्ग सहयोग की नीति से लाया जा सकता है।

ब्रिटिश मजदूर आन्दोलन का अधिकतम बहुमत बहुत समय से सुधारवादी रहा है। वर्ग सहयोग के उनके व्यवहार का फल सिद्धांतहीन विरोधी बन गए हैं। पूंजीवादी ढांचे के अन्तर्गत सामाजिक सुधारों को लाने के उनके उद्देश्यों को ध्यान में रखत हुए यह उन्हें ऐसी तीतियों के समर्थन के लिए बाध्य करता है जो पूंजीवाद को क्रियान्वित करने में उसे लाभान्वित करें। इसके फलस्वरूप, मजदूर वर्ग के आन्दोलन में पूंजीपति वर्ग के सैनिकों के रूप में उनकी भूमिका का प्रतिदिन प्रदर्शन होता रहता है।

2. फोबियान वाद कया है?

ब्रिटेन में सुधारवाद का सैद्धांतिक आधार, जिसकी व्याख्या फोबियन सोसायटी के बुद्धिजीवियों ने बीसवीं सदी के आरंभ में की थी। इस नाम की व्युत्पत्ति रोतन सेवापति फेवियस मैक्सीमस (देर करने वाला) के नाम से हुई, जिसने एक अधिक शक्तिशाली शत्रु के खिलाफ युद्ध के सैनिक सिद्धांत को विकसित किया।

फेवियनवाद का विश्वा है कि सामाजिक प्रणाली का रूपान्तरण पूंजीपति वर्ग द्वारा हिंसात्मक विरोध के बिना किया जा सकता अगर आंशिक सुधार **बहुत छोटी मात्रा** में किया जाएगा। इसलिए कोई प्रस्तावित सामाजिक सुधार जो पूंजीपति वर्ग के हिंसात्मक विरोध को उकसाता है, फेवियनों की दृष्टि में कोई प्रस्तावित सामाजिक सुधार को पूंजीवाद की मुनाफे कमाने को उकसाएगा, फेवियन दृष्टिकोंण का तार्किक परिणाम मौलिक सुधार का अनिश्चितकालीन स्थगन होगा।

2. यह स्पष्ट है कि ऐसा दृष्टिकोंण कि मजदूर वर्ग उग्र वर्ग संघर्ष की तुलना में वर्ग सहयोग के द्वारा अधिक उपलब्धि कर सकता है, एक भ्रम है। तथापि, अगर मजदूर वर्ग ने मजदूर आन्दोलन में सुधारवाद की प्रधानता के युग में कोइ उपलब्धियां न प्राप्त की होती, तो इस भ्रम को बहुत पहले खत्म कर दिया गया होता। सुधारवाद के भ्रम के आत्मपरक आधार को हम मजदूर वर्ग की कुछ वास्तविक उपलब्धियों में देख सकते हैं। इन वास्तविक उपलब्धियों का श्रोत क्या है?

ब्रिटेन में (1815 से पूर्व) मजदूरों के पहले संगठन अधिक उग्रवादी और समाजवादी (तथा गैरकानूनी) थे। परन्तु ब्रिटेन दुनिया का पहला औद्योगिक पूंजीवादी देश (विश्व की कार्यशाला बन गया– और ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग अपेखाकृत शीघ्र एक ऐसा साम्राज्य स्थापित करने में सफल हो गया जिसमें सूर्य औपनिवेशिक देशों से प्राप्त विशाल लाभों की पारी के एक हिस्से का उपयोग कुशल शिल्पकारों के उच्चतर तबके को उनकी श्रम शक्ति के मूल्य से अधिक पगार देने के लिए यिा।

'रिश्वत पाने वाले' **इस श्रम कुलीन तंत्र** जिसने एक नए प्रकार के श्रमिक संघ नए मॉडल की यूनियनों को जन्म दिया जिसने वर्ग संघर्ष और समाजवादी उद्देश्यों को त्याग दिया और उन्होंने अपनी गतिविधियों को वेतनों, घंटों आदि के सवालों पर सौदेबाजी तक सीमित कर दिया।

इन विशाल लाभों का उपयोग पूंजी के संचय के लिए किया गया जिससे उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि हुई। इसके अलावा तत्कालीन सभ्यता के स्तर में उन्नति हुई एवं श्रम शक्ति के मूल्यों में भी वृद्धि हुई।

पिछले सौ वर्षों में ब्रिटेन में मजदूर वर्ग के वास्तविक लाभ (जिन्होंने सुधारवाद के भ्रम के लिए वस्तुपरक

आधार प्रदान किया) मुख्यतः श्रम शक्ति के मूल्य में वृद्धि की वजह से हुए और इस तथ्य के कारण भी कि श्रम शक्ति के मूल्य के उच्च स्तरों पर निर्धारण के लिए खासकर सुधारवादी वार्तालाप की पद्धति का प्रयोग किया गया।

ब्रिटेन में पिछले सौ वर्षों में मजदूर वर्ग के वास्तविक लाभ अप्रत्यक्ष रूप से **ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग के द्वारा औपनिवेशिक देशों की श्रमजीवी जनता के शोषण** के कारण हुए।

तथापि, इस काल में ब्रिटिश मजदूर वर्ग के वास्तविक वेतनों में उन्नति के बावजूद, श्रमिकों के शोषण की दर में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। अगर सुधारवादी वार्तालाप पद्धति के बाहर, अनाधिकृत उग्रवादी वर्ग संघर्ष न लड़ा गया होता, तो शोषण की दर में और ज्यादा वृद्धि होती।

इस बात पर जोर देना चाहिए कि किसी भी समय ब्रिटिश श्रमिक वर्ग और आम जनता ने प्रत्यक्ष रूप से विशाल औपनिवेशिक मुनाफों मं हिस्सा नहीं बंटाया। इस प्रकार की रिश्वत ने कभी श्रमिक वर्ग क छोटे उच्च तबके के अलावा और किसी को प्रभावित नहीं किया और आज यह श्रम कुलीनतंत्र मुख्य रूप से श्रम आंदोलन के अधकारियों तक सीमित है।

4. हमने देखा कि राजनीतिक दल एक संगठन है जो किसी सामाजिक वर्ग के राजनीतिक हितों का प्रतिनिधित्व करता है। कंजरवेटिव पार्टी किन वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व करती है?

कंजरवेटिव पार्टी न्यूनाधिक रूप से एकाधिकारी पूंजी की खास पार्टी है। यह निर्वाचन के समय मुख्यतः ऐसे मजदूर लोगों को लुभाने की कोशिश करती है जिनकी वर्ग चेतना का स्तर इतना गिरा हुआ है कि वे अपने हितें का सामंजस्य पूरी तौर से बड़े पूंजीपति और अभिजात वर्गों के हितों से कर लेते हैं।

5. लिबरल डेमोक्रेट किन वर्ग हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं?

लिबरल डेमोक्रेट खुलकर पूंजीवादी समाज को कायम रखने के पंख में है और ट्रेड यूनियनों के विरोधी है वे वस्तुपरक रूप से एकाधिकारी पूंजी के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे कंजरवेटिव पार्टी और एकाधिकार की आलोचना के द्वारा वे श्रमजीवी जनता को चुनाव में लुभाने की कोशिश करते हैं किन्तु पूंजीवाद का समर्थन करते हैं और लेवर पार्टी को अति उग्रवादी मानते हैं। वे एकाधिकारी पूंजीवाद क विकास से क्षुब्ध प्रतिनिधित्व करती है।

6. लेबर पाटी किन वर्ग हितों का प्रतिनिधित्व करती है?

संसद में मजदूर वर्ग की आवाज बुलंद करने के स्थापित लेबर पार्टी कभी भी मजदूर वर्ग की आवाज बुलंद करने के स्थापित लेबर पार्टी कभी भी मजदूर वर्ग की सचची पार्टी नहीं थी क्योंकि ऐसी पार्टी एक क्रांतिकारी सोशलिस्ट पार्टी ही हो सकती है। अपने जन्म के समय से मार्क्सवाद विरोधी लेवर पार्टी सुधारवादी सिद्धांत का उपदेश देती थी कि राज्य एक तटस्थ संस्था है जिसपर श्रमजीवी जनता अपने हितों के लिए संसद में बहुमत प्राप्त कर नियंत्रण कर सकती है। उनी फवियन विचारधारा ने लेकर सरकारों को ऐसी नीतियों को क्रियान्वित करने के लिए प्रोत्साहित किया निका उद्देश्य क्रामिक, आंशिक, सामाजिक सुधार की (अनिश्चित रूप से लंबी) अवधि में पूंजीवाद का संचालन करना था जिससे उसके मुनाफे सुरक्षित रहे।

इसलिए इस तथ्य के बावजूद कि उसकी सदस्यता मुख्य रूप से मजदूर वर्ग से गठित होती है तथा मजदूर यूनियनें उससे जुड़ी हुई है। लेबर पार्टी वस्तुपरक रूप से एकाधिकारी पूंजी के हितों की रक्षा करती है। इसकी अपील का रुझान मुख्यतः उस श्रमजीवी जनता की ओर होता है जिसमें न्यूनतम वर्ग चेतना का विकास हो चुका है जो वर्ग संघर्ष के अस्तित्व को समझती है और फलतः एक मजदूरों की पार्टी की आवश्यकता को स्वीकार करती है। यह इस समय एकाधिकारी पूंजी की रिजर्व पार्टी है जिसे किसी खतरे के बगैर सरकार बनाने की उस वक्त अनुमति दी जा सकती है जब कंजरवेटिव पार्टी मतदाताओं का समर्थन खो चुकी होती है। इसके अलावा मजदूरों की पार्टी होने की छवि, जब यह सत्ता में हो इसे अनुमति देती है कि इन मजदूर वर्ग विरोधी नीतियों को अपेक्षाकृत बहुत कम विरोध के साथ क्रियान्वित कर दे क्योंकि यदि ऐसे कदम कंजरवेटिव सरकार उठाए तो ज्यादा तीव्र विरोध की संभावना होती है।

7. संशोधन वाद क्या है?

मार्क्सवाद लेनिनवाद का संशोधन, इस बहाने से कि उसे परिवर्तित परिस्थितियों का सामना करने के लिए सृजनात्मक तरीक से विकसित किया जा रहा है। इस प्रकार से कि उसे भ्रष्ट करते हुए एकाधिकारी पूंजी की सेवा में लगाया जाए।

1951 में द ब्रिटिश रोड टु सोशलिज्म के प्रकाशन ने जिसमें उपदेश दिया गया कि ब्रिटेन में समाजवाद की स्थापना संसदीय लोकतंत्र के द्वारा हो सकती है, ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के मार्क्सवाद लेनिनवाद से संशोधनवाद की दिशा में संक्रमण को अंकित किया।

1953 में स्तालिन की मृत्यु के बाद, संशोधनवाद अधिकता पार्टियों में खुलकर सामने आया, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का निर्माण किया था उनमें अब संशोधनवाद का प्रभुत्व हो गया। एवं संशोध नवादी पार्टियों के नेतृत्व में सारभूत रूप से पूर्वी यूरोप के अधिकतम देशों में पूंजीवादी प्रणाली को फिर से स्थापित कर दिया गया।

8. डेमोक्रेटिक लेफ्ट किन वर्ग हितों का प्रतिनिधित्व करती है?

द डेमोक्रेटिक लेफ्ट (भूतपूर्व ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी) दावा करती है कि वह पूंजीवाद का उन्मूलन और माओवाद की स्थापना करना चाहती है।

परन्तु द डेमोक्रेटिक लेफ्ट के नेतृत्व ने खुलकर मार्क्सवाद–लेनिनवाद को अस्वीकार कर दिया और समाजवादी क्रांति के द्वारा मजदूर वर्ग के द्वारा पूंजीवादी राज्य के उन्मूलन को भी खुलकर अस्वीकार कर दिया। चूंकि यह मजदूरों को समाजवादी क्रांति के संगठन से दूर ले जाना चाहती है निरर्थक निर्वाचन गतिविधि में लिप्त कर इन्हें समाजवाद के एकमात्र मार्ग से हटाना चाहती है, द डेमोक्रेटिक लेफ्ट वस्तुपरक रूप से एकाधिकारी पूंजीव के हितों के लिए काम करती है। वह ऐसे समाजवाद श्रमिकों का समर्थन चाहती है जिन्होंने एकाधिकारी पूंजी क एजेंट के रूप मं लेवर पार्टी के चरित्र को पहचान लिया है।

9. त्रॉत्स्कीवावद क्या है?

ऐसी नीति को संगठित रूप से प्रस्तावित करना जो वस्तुपरक रूप से एकाधिकारी पूंजी के हितों का समर्थन करती है, जिनहें झूठे वामपंथी, झूठे क्रान्तिकारी और झूठे मार्क्सवादी शब्दाडंबर के आवरण में छिपा दिया गया है।

मॉत्स्कीबाद के जनक लिया मॉत्स्की ने, अनुशासित श्रमिकों की पार्अी के निर्माण और किसान वर्ग के साथ गठबंधन की लेनिन की नीति के खिलाफ संघर्श किया, स्तालिन की एक देश मं समाजवाद के निर्माण की नीति क विरुद्ध लड़ाई की, और अंत में फासीवादी राज्यों की गुप्तचर एजेंसियों के साथ सोवियत संघ में श्रमिक वर्ग की सत्ता के उन्मूलन के उद्देश्य से सहयोग किया।

अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में संशोधन वाद की विजय के साथ और सेवियत राज्य के खिलाफ संशोधनवादियों द्वारा मॉत्स्की की निन्दाओं से मान्यता देने के बाद मात्स्कीवाद को सच्ची मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी की अनुपस्थिति में उग्रवादी बुद्धिजीवियों ओर विद्यार्थियों को प्रभावित करने में काफी अस्थायी सफलता प्राप्त हुई।

10. आज ब्रिटेन में कोई ऐसी पार्टी नहीं जो मजदूर वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करती हो। क्या समाजवादी क्रांति लाने के लिए ऐसी पार्टी आवश्यक है?

यह बिल्कुल आवश्यक है

हमने देखा है कि समाजवाद की स्थापना तब तक नहीं हो सकती जब तक मजदूर वर्ग शक्ति की ऐसी मशीन का निर्माण नहीं कर लेता जो पूंजीवादी राज्य की शक्ति की मशीन का ध्वंस कर सके। परन्तु जिस प्रकार फौज सेनापतियों के नेतृत्व के बिना सफलता पूर्वक युद्ध नहीं कर सकती क्योंकि दैनिक गतिविधियों का संयोजन करने के लिए जनरल स्टाफ जरूरी होता है, उसी तरह मजदूर वर्ग को सेना पूंजीवादी राज्य क विरुद्ध सफल

क्रांतिकारी युद्ध नहीं लड़ सकती जब तक उसके पास अपना जनरल स्टाफ न हो जो उसका नेतृत्व करे और उसकी गतिविधि का संयोजन करे।

मजदूर वर्ग के इस अग्रिम दस्ते का संगठन पुराने ढंग क राजनीतिक दल के रूप में नहीं हो सकती लेबर पार्टी के ढंग की पार्टी के रूप बिल्कुल नहीं, जिसका निर्माण पूंजीवादी 'संसदीय लकतंत्र' के ढांचे वे अंतर्गत काम करने के लिए हुआ है। यह एक नए ढंग की पाटी होनी चाहिए, जिसका संगठन इस तरह के रूप में और मार्क्सवीद–लेनिनवादी सिद्धांत के संकेतों से मार्ग दर्शन लेकर कार्य करने में सक्षम हो सके।

11. लोकतांत्रिक केन्द्रवाद क्या और मार्क्वादी लेनिनवादी पार्टियों का संगठन इस सिद्धांत के आधार पर कयों होना चाहिए?

किसी सेना को विजय दिलाने के लिए उसके जनरल स्टाफ के लिए जरूर है कि वह अपनी फौजों को कार्य की एक लाइन प्रदान करे। अगर भिन्न भिन्न सेनापति कार्य की भिन्न भिन्न लाइनों का सुझाव देंगे, ते उनकी फौज हार जाएगी। मार्क्सवादी लेनिनवाउी पार्टी के, इसलिए संकल्प की एकता पर आधारित होना चाहिए, और ऐसा केन्द्रवाद क संगठनात्मक सिद्धांत के द्वारा किया जा सकता है। उच्चतर संस्थाओं के निर्णय निम्नतर संस्थाओं पर बाध्य रूप से मान्य होंगे और प्रत्येक पार्टी सदस्य को उनका पालन करना होगा जबकि बहुसंख्यकों के निर्णय अल्पसंख्यकों के लिए बाध्य और मान्य होंगे।

तथापि, यह केन्द्रवाद एकतांत्रिक नहीं बल्कि लोकतांत्रिक होगा। पार्टी संगठन के प्रत्येक स्तर पर वाद–विवाद की स्वतंत्रता होनी चाहिए और आलोचना का अधिकार भी होना चाहिए। उच्चतर संस्थाओं के पास वक्तव्य भेजने का अधिकार होना चाहिए, और सभी उच्चतटीय संस्थाओं का प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से, लोकतांत्रिक पद्धति से निर्वाचन होना चाहिए जिसमें पार्टी के सभी सदस्य हिस्सा ले सकें। सदस्य उच्चतर संस्थाओं में अपने ऐसे साथियों का चुनकर भेजते हैं। जिनका उनके विश्वास के अनुसार उच्चतम राजनीतिक स्तर है और उचचतम वर्गीय और दलीय निष्ठा है। वे उनेक नेतृत्व को स्वीकार करने के लिए सहमत होते हें– जब तक वे उनके विश्वास न खो दें– विश्वास खोने पर नेताओं को इसी लोकतंत्र प्रक्रिया के द्वारा हटाया जा सकता है और उन्हें हटा देना चाहिए।

12. 1. रणनीति; 2. कार्यनीत; क्या है?

रणनीति उस मुख्य प्रहार की दिशा का निर्धारण है, जिसके द्वारा मजदूर वर्ग क्रांतिकारी प्रक्रिया में किसी निश्चित चरण में हमले का प्रयास करेगा।

कार्यनीति कार्य की उस लाइन का निर्धारण है जिसे मजदूर वर्ग को किसी खास तात्कालिक छोटी अवधि ा में क्रियान्वित करता है।

जब कि रणनीति का उद्देश्य युद्ध जीतना है, कार्यनीति का उद्देश्य किसी खास **छोटी लड़ाई** जीतना है।

13. श्रम आन्दोलन क्या है?

श्रमजीवी जनता क विभिन्न जन संगठन।

श्रमिक संघ श्रमजीवी जनता के **कर्मचारियों** के रूप में संगठन है।

सहकारी समितियां श्रमजीवी जनता के **उपभोक्ताओं** के रूप में संगठन हैं।

लेबर पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, इत्यादि श्रमजीवी जनता के मतदाताओं के ग्रुप में संगठन हैं।

14 मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी के श्रम आंदोलन के इन जासंगठनों से क्या संबंन्ध होने चाहिए?

यद्यपि ये संगठन, अपने नेतृत्व नीतियों और प्रभुत्वशाली विचार के कारण सारीूत रूप से एकाधिकारी पूंजी के हितों का समर्थन करते हैं, तथापि उनका निर्माण श्रमजीवी जनता करती है– इन श्रमिकों का राजनीतिक स्तर श्रम आन्दोलन से बाहर रहने वाले श्रमिकों की तुलना में थोड़ा ऊंचा होता है। ये श्रमिक लोग ही सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन करके समाजवाद ला सकते हैं।

मार्क्सवादी लेनिनवादियों को इसलिए श्रमिक संघों और सहकारी संघों के अन्तर्गत रहकर कार्य करना

चाहिए। वहां भागीदारी करते हुए, श्रमजीवी जनता के दैनिक संधर्ष का नेतृत्व करने के लिए उन्हें प्रयास करना चाहिए। अपने समर्पित, निःस्वार्थ काम से उन्हें श्रमजीवी जनता का विश्वास जीतना चाहिए और साबित करना चाहिए कि वे उनके हितों के लिए संघर्ष करने में सर्वाधिक सक्रिय योद्धा हैं, और अपने धैर्यपूर्ण, सिद्धांत पर आधारित काम से उन्हें इन संठनों के प्रतिक्रियावादी नेताओं का पर्दाफाश करते हुए उन्हें नेतृत्व के पदों से हटाकर ऐसे नेताओं को चुनना चाहिए जो मजदूर वर्ग के प्रति निष्ठा रखते हों। सिर्फ जब इस तरह उन्हें हटाना असंभव हो, और आम सदस्य भी समझ लें कि ऐसा करना संभव नहीं (क्योंकि नेता संगठन की मशीनरी पर अपने कंट्रोल का सफलता पूर्वक उपयोग करते हुए आन्तरिक लोकतंत्र के अमल को रोक देते हैं।) तभी यह सही होगा कि ईमानदार आम सदस्यों को नए स्वतंत्र वर्ग संगठन में ले जाया जाए जो पूंजीपति तर्ग के लेबर एजेंटों` नियंत्रण से मुक्त हों।

आम लोगों को केवल प्रचार और आंदोलन के द्वारा यह विश्वास नहीं दिया जा सकता कि समाजवाद के लिए उन्हें क्रांतिकारी मार्ग पर चलना चाहिए। मार्क्सवादी लेनिनवादियों की रणनीति का उद्देश्य दिन प्रतिदिन के संघर्ष में जनता को नेतृत्व प्रदान करना होना चाहिए, इस तरह से कि संघर्ष में वे अपने अनुभव के फलस्वरूप अपनी राजनीतिक चेतना का विकास करें और इसी प्रकार वे मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी को अपने अग्रिम दस्ता मान सकें और राजनीतिक रूप से अग्रगामी **श्रमजीवी लोग पार्टी** को सदस्यता ग्रहण करें।

कक्षा छः : राष्ट्रीयता का सवाल

1. राष्ट्रवाद क्या है?

''ऐतिहासिक रूप से स्थापित एक स्थायी जनसमुदाय, जिसका निर्माण समान भाषा, क्षेत्र, आर्थिक जीवन और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण के आधार पर हुआ है ओर जिसकी अभिव्यक्ति समाज संस्कृति में होती है।''– जे. वी. स्तालिन।

जन समुदाय जिसमें इन विशेषताओं में **कोई एक** विशेषता अनुपस्थित है राष्ट्र नहीं है।

2. राष्ट्र कैसे विकसित होता है?

जन समुदाय का राष्ट्र में विकास तीन मौलिक चरणों के द्वारा होता हैः

पहला चरण कबीले का है जिसका आधार गोत्रों के रिश्तों से निर्मित एकता है। कबीलाई समाज आदिम साम्यवाद के अंतर्गत सामाजिक संगठन की विशिष्ट पद्धति है।

जब कबीलाई समुदाय का औजारें और तकनीकों के विकास के कारण विघटन होता है, तो कबीले संघों और राजतंत्रों में संगठत हो जाते हैं; कबीलाई भाषाओं में से एक पर आधारित समान भाषा का उदय होता हैं यह प्रक्रिया जनसमुदाय के विकास में दूसरे चरण पर ले जाती है अर्थात पूर्व राष्ट्रीयता या प्रजाति पूर्व रक्त संबंध न होकर भौगोलिक स्थिति है। इसकी समान भाषा समान क्षेत्र और समान संस्कृति तो होती हैं परन्तु तथापि साझा बाजार क रूप में आर्थिक एकता नहीं होती। पूर्व राष्ट्र दासता और सामन्तवाद के सामाजिक संगठन की विशिष्ट पद्धति है।

सामंती समाज के ढांचे के अन्तर्गत पूंजीवाद के विकास क साथ, पूर्व राष्ट्र की विशेषताओं के विकास की गति तेज हो जाती है ओर इसके साथ साथ आर्थिक एकता, साझा बाजार की स्थापना की प्रक्रिया ही पूर्व राष्ट्र के रूपान्तरण कर देती है।

3. 'स्वतन्त्र राजयों के निर्माण के लिए राष्ट्रों के अधिकार' का क्या अर्थ है?

विश्व के राष्ट्र उत्पीड़ित और उत्पीड़क राष्ट्र का प्रभुत्व स्थापित होता है, जिसका लाभ उसके शासक वर्ग को प्राप्त हाता है' जिसका लाभ अपने भाग्य का निर्णय नहीं कर सकता। जब मार्क्सवादी लेनिनवादी घोषणा करते हैं कि वे राष्ट्रों के द्वारा स्वतंत्र राज्यों के निर्माण के अधिकार को मान्यता देते हैं तो उनका अभिप्राय है कि उत्पीड़ित राष्ट्र के उस संघर्ष को जिसका ध्येय उत्पीड़क राष्ट्र उत्पीड़ित राष्ट्र का **न्यायोचित संघर्ष माना जाय और जिसका वे पूर्ण समर्थन करते हैं।**

4. औपनिवेशिक पद्धति का देश क्या है?

ऐसा देश जो औद्योगिक रूप से अपेक्षाकृत अल्प विकसित है और जिस पर किसी महाशक्ति का आर्थिक और संभवतः राजनीतिक प्रभुत्व है।

5. औपनिवेशिक पद्धति के देशों के कितने प्रकार हैं? प्रत्येक के उदाहरण दीजिए।

औपनिवेशिक पद्धति का देश हो सकता हैः

1)औपनिवेशिक, प्रभुत्वशाली शक्ति के खुले, प्रत्यक्ष राजनीतिक शासन के आधीन (जैस जिब्राल्टर, हांगकांग, उत्तरी आयरलैंड)।

2) अर्ध उपनिवेश, नाममात्र के लिए स्वतन्त्र, किन्तु जिसकी आर्थिक प्रणाली का अधिकतर नियंत्रण प्रभुत्वशाली शक्ति के शासक वर्ग के लाभ के लिए हो (इजरायल, कोलंबिया, सऊदी अरब)।

3) नव उपनिवेश भूतपूर्व उपनिवेश, जो अब अर्थ उपनिवेश बन गया है जिसकी आर्थिक प्रणाली पर अधिकतर नियंत्रण प्रभुत्वशाली शक्ति के शासक वर्ग के लाभ के लिए हो (आमतौर के वही शक्ति जो पहले उस

पर शासन प्रत्यक्ष रूप से करती थी (जैसे न्यूनीशिया, जमैका, कलर)।

6. राष्ट्रवाद क्या है?

विचारधारा जो मानती है कि यह जरूरी है कि 'राष्ट्र के हितों को' उस राष्ट्र के सभी सदस्यों के लिए सर्वोपरि राजनीतिक महत्व का समझा जाए।

7. क्या राष्ट्रवाद प्रगतिशील है अथवा प्रतिक्रियावादी?

यह परिस्थितियों पर निर्भर है।

जब राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से गुजर रहा हो या जब उत्पीड़ित राष्ट्र स्तवंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा हो, तो स्वतंत्रता प्रगतिशल भूमिका निभा सकती है।

तथापि जब किसी स्वतन्त्र राष्ट्र का शासक वर्ग पूंजीपति वर्ग बन जाता है, तो राष्ट्र के हितों के रूप में प्रस्तुत करता है और इस प्रकार मजदूर वर्ग को फसलाने की कोशिश करता है जिससे वह शोषण के विरुद्ध और समाजवादी समाज की स्थापना के लिए अपने वर्ग संघर्ष को छोड़ दे और ऐसा 'राष्ट्रीय एकता के हितों की रक्षा के लिए जो तथ्य में पूंजीपति वर्ग के हित होते हैं।

राष्ट्रवाद इसलिए भी प्रतिक्रियावादी भूमिका निभाता है क्योंकि यह एक राष्ट्र के श्रमिकों के मन में दूसरे राष्ट्रों के श्रमिकों के प्रति आत्मपरक शत्रुता का सृजन करता है, जबकि वस्तुपरक रूप से वे समाजवादी विश्व के लिए संघर्ष में एक दूसरे के मित्र होते हैं।

8. ब्रिटिश द्वीप समूह में कितने राष्ट्र हैं?

दोः ब्रिटिश राष्ट्र और आयरिश राष्ट्र।

भौगोलिक और प्रजातीय कारकों से ब्रिटिश द्वीप समूह में पूर्व राष्ट्रों का विकास चार विशेष प्रदेशों में हुआः आयरलैंड, स्काटलैंड, वेल्स और इंग्लैंड।

परन्तु इससे पहले कि स्काटिश, वैल्श और इंग्लिश पूर्व राष्ट्रों को आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक एकीकरण के द्वारा एक ब्रिटिश राष्ट्र में संगठित कर दिया। सत्रहवीं सदी की क्रांति के द्वारा, ब्रिटिश पूंजीपति र्व उस वर्ग गठबंधन की प्रमुख शति बन गया जो ब्रिटेन पर शासन करता है।

यद्यपि मात्रा और संस्कृति में पूर्व राष्ट्रीय भेदों के अवशेष एक आर्थिक प्रणाली, एक बाजार और एक राष्ट्र बन गया है।और अनेक अंशों में सारे देश में एक भाषा और एक संस्कृति है।

आयरलैंड में, तथापि ब्रिटेन से समुद्र की बाधा होने की वजह से आयरिश राष्ट्र का विकास स्वतंत्र रूप से हुआ, उसका आयरिश सागर के उस पार विकसित हाने वाली प्रजातियों के साथ मिश्रण नहीं हुआ। पूंजीवाद के विकास के साथ आयरिश राष्ट्र अस्तित्व में आया।

9. 'स्काटिश राष्ट्रवाद' और 'वैल्श राष्ट्रवाद' का क्या महत्व है?

क्योंकि स्काटलैंड और वेल्स के लेाग राष्ट्रों में गठित नहीं है, बल्कि ब्रिटिश राष्ट्र के हिस्से हैं, स्काटिश और वैल्श राष्ट्रवाद कृतिम हैं।

वस्तुपरक रूप सेएकाशि आर वैल्श राष्ट्रवाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हिस्सों को पूरा करता है जिसके द्वारा स्काटलैंड और वेल्स की श्रमजीवी जनता के शोषण का दोष का काल्पनिक शत्र 'अंगेज साम्राज्यवादियों' और प्रायः वास्तव में, अंग्रेजों पर मदद दिया जाता है।

यह ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के हितों की पूर्ति सकॉटलैंड और वेल्स के श्रमजीवियों और इंग्लैंड के श्रमजीवियों के बीच में फूट डालकर करता है। यह सुझाव देता है कि (उत्पीड़ित राष्ट्रों के सदस्यों के रूप में) उनके हित और स्काटलैंड तथा वेल्स के पूंजीपतियों के हित समान हैं।

10. नस्लवाद क्या है?

यह दृष्टिकोण कि शरीर की त्वचा के रंग के आधार पर कोई राष्ट्रीय समुदाय दूसरे से श्रेष्ठ है। साम्राज्यवाद के इतिहास के कारण नस्लवाद का सर्वाधिक सामान्य उदाहरण 'श्वेत नस्लवाद' है, जो मानता है कि सफेद त्वचा के लोग काली त्वचा के लोगों से श्रेष्ठतर है।

~~साम्राज्यवादी जो विश्व की जनसंख्या का क्षुद्र अल्पमत हैं, साम्राज्यवादी देशों की श्रमजीवी जनता पर तथा~~

औरपिनेशिक पद्धति के देशों पर अपने प्रभुत्व को केवल फूट डालो और राज करो' के आधार पर कायम रख सकते हैं। फलतः वे युवा और वृद्ध बुद्धिजीवी और शारीरिक श्रमिकों, स्त्रियों और पुरुषों प्रोटेस्टेंटों और कैक्षेलिकों, हिंदुओं और मुसलमानों, गोरों और कालों इत्यादि के बीच में फूट डालने का प्रयास करते हैं।

नस्लवाद की सभी पद्धतियां जो एक नस्ल तथा दूसरी नस्ल के बीच में नफरत पैदा करती है, साम्राज्यवादियों के हितों का संरक्षण करती हैं।

काला नस्लवाद यद्यपि यह कुछ सीमा तक सफेद नस्लवाद की प्रतिक्रिया है क दूसरे के पूरक हैं। सफेद नस्लवादी तथा काले नस्लवादी दोनों उन साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चे के निर्माण का विरोध करते हैं जिसमें साम्राज्यवादी देशो ंकी मजदूर जनता और औपनिवेशिक पद्धति के देशों की श्रमजीवी जनता शामिल हो, जो साम्राज्यवाद का ध्वंस करने के लिए आवश्यक है।

11. विकसित पूंजीवादी देश में क्रांतिकारी प्रक्रिया का केवल एक चरण होता है– अर्थात समाजवादी क्रांति का चरण। औपनिवेशिक पद्धति के देशों में क्रांतिकारी प्रक्रिया के दो चरण होते हें। वे क्या हैं?

पहले राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्राति का चरण अर्थात राष्ट्रीय मुक्ति जिसका ध्येय विदेशी प्रभुत्व को खत्म करना है।

दूसरे, समाजवादी क्रांति का चरण है।

12. औपनिवेशक पद्धति के देश में आमतौर से पूंजीपति वर्ग के दो अनुभाग होते हैं। वे क्या हैं?

पहले, दलाल पूंजीपति (वित्त और वाणिज्य के क्षेत्र में खास तौर से) जो प्रभुत्वशाली विदेशी ताकत पर निर्भर होते हैं तथा इनका उसे समर्थन देने में वतुपरक स्वार्थ होता है और

दूसरे राष्ट्रीय पूंजीपति (खासतौर से उद्योग के क्षेत्र में) जनमें हितों और प्रगति का प्रभुतवशाली विदेशी ताकत दबाती हैं तथा इनका वस्तुपरक हित विदेशी प्रभुत्व के उन्मूलन में होता है।

3. किन सामाजिक वर्गों का, औपनिवेशिक पद्धति के देश में वस्तुपरक हित राष्ट्रीय लेकतांत्रिक क्रांति का 1) विरोध करने में, 2) समर्थन करने में हेता है।

बड़े जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों का वस्तुपरक हित राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति का विरोध करने में होता है।

राष्ट्रीय पूंजीपतियों, किसान वर्ग, शहरी निम्न बुर्जुआजी और श्रमिक वर्ग का वस्तुपरक हित उसका समर्थन करने में होता है।

14. औपनिवेशिक पद्धति के देश में किन सामाजिक वर्गों का वस्तुपरक हित समाजवादी क्रांति का 1.) विरोध करने में, 2) समर्थन करने में होता है?

बड़े जमींदारों धनी (पूंजीपति) किसानों, शहरी निम्न बुर्जुआ वर्ग के ऊंचे तबकों तथा संपूर्ण पूंजीपति वर्ग का वस्तुपरक स्वार्थ समाजवादी क्रांति के विरोध करने में होता है।

किसान वर्ग के गरीब तबकों, शहरी निम्न बुर्जुआ वर्ग के गरीब तबकों तथा मजदूर वर्ग का वस्तुपरक हित उनकस समर्थन करने में होता है।

15. मार्क्सवादी लेनिनवादी, जिनकी मूल दिलचस्पी समाजवादी क्रांति लाने में है, औपनिवेशिक पद्धति के देश मं राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति का, क्रांतिकारी प्रक्रिया के पहले चरण के रूप में समर्थन क्यों करते हैं?

क्योंकि राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति समाजवादी क्रांति का विरोध करने वाली कुछ शक्तियों (बड़े जमींार और दलाल पूंजीपतियों) को पराजित कर देती है, यह हार आंशिक हो पूर्ण हराने वाले शक्तियों का गठबंधन समाजवादी क्रांति से लाभान्वित होने वाले तत्वों की अपेक्षा ज्यादा विस्तृत है।

16. तब औपनिवेशिक पद्धति के देश में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के विशय में मार्क्सवादी लेनिनवादी रणनीति क्या होती है?

औपनिवेशिक पद्धति के देश में क्रांतिकारी प्रक्रिया में अधिकतम विस्तृत साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चे के निर्माण का प्रयास करना, जिसमें वे सभी वर्ग शामिल हो, जिनका राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के समर्थन में

वस्तुपरक हित निहित हो;

इस साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चे का नेतृत्व मजदूर वर्ग लेनिनवादी पार्टी के हाथ में हो इसका प्रयास करना;

यह प्रयास करना कि राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति में रूपान्तरित कर दिया जाय।

कात्स्कीवादी नारा कि औपनिवेशिक पद्धति के देश में समाजवाद अभी लाया जाए, जो राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के आवश्यक चरण को लांघने की चेष्टा करता है वस्तुपरक रूप से समाजवाद के दुश्मनों की मदद करता है।

17 औपनिवेशिक पद्धति के देश में, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के संबंध में राष्ट्रीय पूंजीपतियों के क्या उद्देश्य होते हैं?

राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति को नेतृत्व प्रदान करने तथा क्रांतिकारी प्रक्रिया को इसी चरण पर रोक कर पूंजीपति राजनीतिक सत्ता पर स्वयं अधिपत्य कर लें और श्रमजीवी जनता का शोषण कर सकें।

औपनिवेशिक पद्धति के देश में जहां मार्क्सवादी लोनिनवादी पार्टी के नेतृत्व में विसित मजदूर वर्ग मौजूद होता है, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के विकास के समय क्रांतिका नेतृत्व करने के लिए मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच में वर्ग संघर्ष होता हैं यदि मजदूर वर्ग इस नेतृत्व को प्राप्त करने में सफल होता दिखाई पड़ता है ते राष्ट्रीय पूंजीपति निश्चित रूप से राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति का साथ त्याग देते हैं और प्रतिक्रांति के पक्ष में शामिल हो जाते हैं वे शोषकों के रूप में पराधीन स्थिति को समाजवादी क्रांति में शोषण के अधिकार से वंचित होने की स्थिति की तुलना में ज्यादा पसन्द करते हैं।

18. 1. माओवाद 2. कास्त्रोवाद क्या है?

दोनों औपनिवेशिक पद्धति के देशों` लिए प्रस्तुत संशोधनवाद की प्रणालियों हैं। वे राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के नेतृत्व के लिए एक अनुशासित पार्टी की जरूरत है, लेकिन इस पार्टी को वह मुख्यतः किसानों से निर्मित करते हुए उसे विकृत कर देता है। यह मजदूर वर्ग के संधर्ष को राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के नेतृत्व के लिए ठंडा कर देता है और मानता है कि श्हार (शहरी मजदूर वर्गीय क्षेत्रों) का ग्रामीण क्षेत्रों (गमीण किसानों) के द्वार मुक्त किया जाना चाहिए। माओवाद ने चीनी राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को सक्षम बनाया जिससे वे चीन में झूठे लाल झंडों में छिपाकर एक पूंजीवादी समाज की स्थापना कर सकें।

कास्त्रोवाद (जिसका नाम क्यूबा के संशोधनवादी नेता फिदेल कास्त्रो के नाम पर रखा है) उन मार्क्सवादी लेनिनवादी धारणाओं को अस्वीकार करता है जो राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के लिए मजदूर वर्ग के नेतृत्व को मजदूर वर्ग के लिए मार्क्सवादी पार्टी के नेतृत्व को आवश्यक मानती हैं। इसके स्थान में यह राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति नेतृत्व के लिए यह धारणा प्रस्तुत करता है कि इसके लिए निम्न बुर्जुआ वर्ग के दुःसाहसी राजनीति से प्रेरित हुए बिना विप्लवी केन्द्र का निर्माण कर सकते हैं।

जबकि कात्रोवाद राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की जरूरतों को एक अपेक्षाकृत छोटे औपनिवेशिक पद्धति के देश में पूरा करता है जहां प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां भी अपेक्षाकृत कमजोर हैं, माओवाद राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की जरूरतों को अपेक्षाकृत विशाल औपनिवेशिक पद्धति के देश में पूरा करता है जहां प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां भी अपेक्षाकृत मजबूत हैं। चीन के उदाहरण में एक अनुशासित पार्टी (संभवतः मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्ट के आवरण में छिपकर) का संचालन सफलता पूर्वक कर सके।

19. सर्वहारा वर्गीय अन्तर्राष्ट्रीय क्या है?

प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवाद का विलोम।

यह सभी राष्ट्रों की श्रमजीवी जनता के बन्धुत्व और समान हितों तथा कार्य और संगठन में उनकी कजुटता की जरूरत पर जोर देता है। इसका उदाहरण प्रसिद्ध मार्क्सवादी लेनिनवादी नारा हैः 'सभी देशों के मजदूरों, एक हो जाओ!''

कक्षा सात : युद्ध

1. युद्ध क्या है?

''सशस्त्र मनुष्यों की बडी संख्या के बीच में लड़ाई जरूरी नहीं कि राज्यों के बीच में हो, यह कबीलों के बीच में भी हो सकती है।

2.गृह युद्ध क्या है?

एक ही राज्य के अन्तर्गत युद्ध।

3. शांतिवादियों और मार्क्सवादिदी लेनिनवादियों के बीच में युद्धके प्रति दृष्टिकोण में क्या मुख्य भेद हैं?

सर्वप्रथम शान्तिवादी सभी युद्धों की निन्दा करते हैं। मार्क्सवाद लेनिनवादी युद्ध द्वारा ली गई मानवीय आपदाओं के प्रति पूर्ण रूप से सचेतन है, तीसरे विश्व युद्ध को रोकने के लिए प्रयास करते हैं और ऐसी सामाजिक प्रणाली की स्थापना करने की कोशिश कर रहे हैं।जो युद्ध को असंभव कर देगी। तथापित, वे न्यायोचित युद्धों जिनका वे समर्थन करते हैं। और अन्यायपूर्ण युद्धों जिनका वे विरोध करते हैं के बीच में विभेदीकरण करते हैं।

''इतिहास में अनेक युद्ध ऐसे हुए हैं जिनका चरित्र, उनके आतंकों, क्रूरताओं विपदाओं और विभीशिकाओं के बावजूद जो प्रत्येक युद्ध से अनिवार्य रूप से जुड़ी है, प्रगतिशील था, अर्थात उन्होंने मानवजाति के विकास को बढ़ाया, अत्यधिक विनाशकारी और प्रतिक्रियावादी संस्थाओं के विध्वंश में भी सहायता की।''

(वी.आई. लेनिन : सोशलिज्म ऐंड वार' लंदन, पृ.–9)

समाजवादी, समाजवादी नहीं रह सकते, यदि वे सीाी युद्धों के विरोधी हो।''

(वी आई. लेनिनः पैसीफिज्म एंड द वर्कर्स, इन ऐड द वर्क्स; 1940 पृ. 29।

क्षितीय, जब कि शांतिवादी युद्ध में भाग लेने के बारे में अन्तःकरण पर आधारित आपत्ति की नीति को अपनाते हैं मार्क्सवादी लेनिनवाउी अधिकतम अन्यायपूर्ण युद्ध में भी मांग लेते हैं जिससे वे वर्दीधारी मजदूरों युद्ध के विरोध के लिए राजी कर सकें:

युद्ध का वहिष्कार मूर्खतापूर्ण शब्द हैं– कम्युनिस्टों को किसी प्रतिक्रियावादी युद्ध में भी शामिल होना चाहिए।

(वी.आई.लेनिनः नोटस आन द क्वेश्चन आफ द टास्टक्स ऑफ अवर डेलीगेशन ऐट दी हेग कान्फ्रेंस; इनः द ऐटीट्यूड आफ द प्रोतीतारित टुवर्डस वार; लंदनः 1932 प्र. 12)

एक उत्पीड़ित वर्ग, जो हथियारेां का प्रयाग करना और हथियार प्राप्त करना नहीं सीखता, उसके साथ दासों जैसा व्यवहार करना ही उचित होगा...।

सर्वहारा वर्ग की स्त्रियां क्या करेंगी...? बस युद्ध और फौज से जुड़ी हर चीज को गालियां देती रहें, सिर्फ निशस्त्रीकरण की मांग करती रहे? एक उत्पीड़ित वर्ग, जो वास्तव में क्रांतिकारी है, उसकी स्त्रियां ऐसी शर्मनाक भूकमका निभाने के लिए कभी राजी नहीं होंगी, वे अपने बेटों से कहेंगी।

'तुम जल्दी आदमी बनोगे। तुम्हें बुदमक दी जाएगी। उसे लेकर उसका इस्तेमाल करना सीखो। सर्वध ाराओं ाके इस ज्ञान की जरूरत अपने भाइयों पर गोली चलाने के लिए नहीं है क्योंकि दूसरे देशों के मजदूर भी उनके भाई हैं... बल्कि उसकी उन्हें जरूरत गरीबी तथा युद्ध से लड़ने के लिए होगी, यह नेक इरादों से नहीं किया जा सकता, बल्कि बुर्जुआदनी पर विजय प्राप्त कर और उसे निरस्त्र करके ही ऐसा करना संभव होगा।'

(वी.आई. लेनिनः पैसीफिज्म ऐंड द वर्कर्स, इनः बार ऐंड द वर्कर्स; 1940 पृष्ठ 34–35)।

4. मनुष्य की अन्तर्निहित आक्रामकता ही युद्ध का कारण है मनोविज्ञान की पाठय पुस्तक। विवेचन कीजिए।

अगर यह सच होता तो सरकारों के लिए जबरन भर्ती की जरूरत नहीं पड़ती।

तथ्य में, युद्ध राजनैतिक उद्देश्यों का हिंसात्मक साधनों से अनुसरण करना है, और इन राजनैतिक उद्देश्यों का आर्थिक आधार होता है।

5. मार्क्सवादी लेनिनवादी किस आधार पर न्यायोचित और अन्यायपूर्ण युद्धों के बीच में विभेदीकरण करते हैं?

युद्ध में प्रत्येक पक्ष की जीत के प्रभाव के विश्लेषण के द्वारा वे यह समझने की चेष्टा करते हैं कि उका असर समाज के विकास पर क्या होगा। यदि किसी पक्ष की विजय समाज पर प्रगतिशील प्रभाव डालेगी तो वह न्योयोचित युद्ध लड़ रहा है। यदि उसकी जीत समाज के विकास पर प्रतिक्रियावादी असर डालेगी तो वह अन्यायपूर्ण युद्ध में सलग्न है।

चूंकि समसामयिक पूंजीवादी विश्व का प्रमुख लक्ष्ण सम्राज्यवाद, एकाधिकारी पूंजीवाद है एक गैर साम्राज्यवादी राज्य, चाहे वह किसी प्रकार का हो, जब किसी साम्राज्यवादी राज्य से युद्ध युद्ध में संलग्न हो तो वह न्यायोचित युद्ध कर रहा है। क्योंकि उसका युद्ध प्रयास **विश्व साम्राज्यवाद को दुर्बल करता है** जब कि साम्राज्यवादी पक्ष में लड़ने वाला राज्य अन्यायपूर्ण युद्ध में लिप्त है क्योंकि उसका युद्ध प्रयास विश्व समाजवाद को बलवान करता है।

युद्ध एक पक्ष में न्यायोचित और दूसरे पक्ष में अन्याय पूर्ण हो सकता है, या वह दोनों पक्षें में अन्यायपूर्ण हो सकता है।

6. साम्राज्यवादी युद्ध क्या है?

प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यवादी शक्तियों (या साम्राज्यवादी शक्तियों के गुटों के बीच में जिसका उद्देश्य विश्व का पुनर्विभाजन होता है।

7. सम्राज्यवादी युद्ध का चरित्र क्या है?

चूंकि किसी पक्ष की विजय विर्फ सम्राज्यवदी ताकतों के एक गुट को दूसरे ुट की कीमत पर मजबूत करेगी और विश्व साम्राज्यवाद को कमजोर नहीं करेगी इसलिए यह युद्ध दोनों पक्षें की ओर से अन्ययपूर्ण है।

8. राष्ट्रीय मुक्ति का युद्ध क्या है?

उत्पीड़ित राष्ट्र की तरफ से उत्पीड़क राष्ट्र (आज यह प्रायः द्रव एक सम्राज्यवादी शक्ति है) के प्रभुत्व से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए युद्ध।

9. राष्ट्रीय मुक्ति के युद्ध का चरित्र क्या है?

चूंकि साम्राज्यवाद सामान्य रूप से, समसामयिक विश्व में प्रधान उत्पीड़क शक्ति है, उत्पीड़ित राष्ट्र की जीत विश्व साम्राज्यवाद को कमजोर करेंगी, जबकि उत्पीड़क राष्ट्र की जीत विश्व साम्राज्यवाद को मजबूत करेगी (इसलिए राष्ट्रीय मुक्ति का युद्ध उत्पीड़ित राष्ट्र के लिए न्योयोचित और उत्पीड़क राष्ट्र के अन्यायपूर्ण है।)

10. 1914–18 के पहले विश्व युद्धकाक्या चरित्र था?

यह एक साम्राज्यवादी युद्ध था, जो दोनों पक्षों की ओर से अन्यायपूर्ण था।

11. तथापि, क्या पहले विश्व युद्ध में उसके अंतर्गत कोई न्यायोचित तत्व भी थे?

अगर बिल्कुल अलग रूप से देखें, तो सर्विया का आस्ट्रिया–अंगरी के खिलाु युद्ध को राष्ट्रीय मुक्ति के लिए न्यायोचित युद्ध माना जा सकता है। परन्तु यह न्यायोचित तत्व पूर्णतः अदृश्य हो गया क्योंकि यह अन्यायपूर्ण साम्राज्यवादी युद्ध के ढांचे में अन्तर्निहित था।

12. सोवियत रूस के विरुद्ध 1918 –22 में हस्तक्षेप के युद्ध का क्या चरित्र था?

यह अनेक साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा रूास में मजदूर वर्ग के शासन को उखाड़ने का प्रयास था, और इसलिए यह सोवियत रूस की ओर न्यायोचित युद्ध और हस्तक्षेप करने वाली साम्राज्यवादी शक्त्यिों की तरफ से अन्यायपूर्ण युद्ध था।

13. 1931 – 45 के चीन–जापान युद्ध का क्या चरित्र था?

चूंकि चीन एक अर्ध सामन्ती , गैर साम्राज्यवादी रज्य था और जापान एक साम्राज्यवादी राज्य, इसलिए यह युद्ध की तरफ से मुक्ति के लिए न्योयोचित युद्ध था और जापान की ओर से अन्यायपूर्ण युद्ध था।

14. जून 1941 तक दूसरे विश्वयुद्ध का क्या चरित्र था?

यह पहले विश्वयुद्ध की तरह विश्व के पुनर्विभाजन के लिए साम्राज्यवादियों के दो गुटों के बीच में एक साम्राज्यवादी युद्ध था। यह तथ्य कि जर्मन साम्राज्यवादी फासीवादी तानाशाही के द्वारा शासन करत थे, जबकि ब्रिटिश साम्राज्यवादी संसदीय लोकतंत्र के द्वारा शासन करते थे, युद्ध के चरित्र के निर्धारण के लिए बिल्कुल अप्रासंगिक था जे दोनों पक्षें की ओर से एक साम्राज्यवादी युद्ध था। जो दोनों पक्षों की ओर से एक साम्राज्यवादी युद्ध था और अन्यायपूर्ण भी।

15. तथापि दूसरे विश्वयृद्ध में (जून 1941 से पूर्व) के काल में क्या न्यायोचित, प्रगतिशील तथ्व थे?

हां। पोलैंड , यद्यपि एक पूंजीवादी राज्य था, साम्राज्यवादी राज्य नहीं था। अगर इसे अलग से देखें तो नात्सी जर्मनी के खिलाफ पोलैंड के युद्ध को राष्ट्रीय मुक्ति का न्यायोचित युद्ध मान सकते हैं।

इसके अलावा, जर्मन और इतालवी साम्राज्यवाद द्वारा अधिकृत देशों की जनता के प्रतिरोधी आंदोलनों को भी (अगर हम उन्हें अलग से दखें) मुक्ति के लिए न्यायोचित युद्ध मान सकते हैं।

परंतु, जैसा कि पहले विश्व युद्ध में ये न्यायोचित प्रगतिशील तत्व छिप गए थे क्योंकि वे अन्यायपूर्ण साम्राज्यवादी युद्ध के ढांचे के अनतर्गत अदृश्य हो गए थे।

16. जून 1941 के बाद दूसरे विश्व युद्ध का चरित्र क्या था?

सोवियत संघ पर जर्मन आक्रमण के बाद (चूंकि सांवियत संध तब एक समाजवादी राज्य था) जर्मनी के विरुद्ध सोवियत युद्ध (अगर हम उसे अलग करके देखें) सोवियत संघ के लिए यह न्यायोचित युद्ध था और जर्मन साम्राज्यवाद के लिए यह अन्यायपूर्ण युद्ध था।

यह महत्वपूर्ण न्यायोचित, प्रगतिशील तत्व जब इसे प्रश्न 14 में उल्लिखित अन्य नयोचित प्रगतिशल तत्वों से जोड़ दिया जाए तो वे उन अन्यायपूर्ण साम्राज्यवादी तत्वों से जोड़ यिा जाए तो वे उन अन्यायपूर्ण साम्राज्यवादी तत्वों को जब अबभी शेष थे, ढक लेते हैं। इसलिए जून 1941 के उपरान्त दूसरे विश्वयुद्ध का बुनियादी चरित्र बदल गया और धुरी राष्ट्रों के लए अन्यायपूर्ण युद्ध बन गया।

17. 1967 के मध्य पूर्व युद्ध का क्या चरित्र था?

इजरायल एक ऐसा राज्य है जिसे साम्राज्यवादी पंक्तियों ने मध्यपूर्व में स्थापित किया है जिसे संयुक्त रज्य साम्राज्यवाद हथियार दो है और जिस पद उसी का प्रभुत्व हैं दूसरे शब्दों में यह संयुक्त राज्य साम्राज्य की मध्यपूर्व में एक बांह है। अरब राज्य साम्राज्यवादी राज्य नहीं हैं और उनमें अधिकांश, 1967 में साम्राज्यवाद की बाहें नहीं थे। फलतः यह युद्ध अरब राज्यों के लिए न्यायोचित था लेकिन इजरायल के लिए अन्यायपूर्ण था।

18. 1991 के खाड़ी युद्ध का क्या चरित्र था?

खाड़ी युद्ध अमरिकी और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के नेतृत्व में साम्राज्यवादी राज्यों के गठबंधन और एक र्गर साम्राज्यवादी राजय, इराक के बीच में लड़ा गया। इराक द्वारा कुवैत पर आक्रमण और इराकी सरकार के प्रति क्रियावादी चरित्र के बावजूद यह इराक के लिए न्यायोचित और साम्राज्यवादी ताकतों के लिए अन्यायपूर्ण युद्ध था।

19. क्या साम्राज्यवाद का निरन्तर अस्तित्व युद्ध का अनिवार्य बना देता है?

हां, पूंजीवादी (साम्रज्यवादी भी) अर्थव्यवस्थां असमान दरों से विकसित होती हैं। फलतः विश्व का विभाजन जो एक काल में सम्राज्यवादी शक्तियों की बाजारों कच्चे माल के स्रोतों, इत्यादि, की आर्थिक जयरतों को प्रतिबिंबित करता है, आगामी काल में उन आर्थिक आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित नहीं कर सकेगा।

कुछ साम्राज्यवादी (वंचित) शक्तियों की आर्थिक जरूरतें उन्हें विवश कर देती हैं कि वे समृद्ध साम्राज्यवादी शक्तियों से उनके बाजारों कच्चे माल के स्रोतों, इत्यादि को छीन कर अपने कब्जें में करें। विश्व का पुनर्विभाजन करने के लिए कुछ समय बाद साम्राज्यवादी युद्ध अनिवार्य हो जाता हैं।

20. उस देश के मार्क्सवादी लेनिनवादियों की जिनका देश अन्यायपूर्ण युद्ध में संलग्न हो, क्या रणनीति है?

इस अन्यायपूर्ण युद्ध का एक गृहयुद्ध में रूपान्तरण करने का प्रयास किया जाए जिसका उ्देश्य अपने देश के शासक वर्ग को सत्ता से हटाना हो।

21. क्या यह रणनीति, साम्राज्यवादी युद्ध में शत्रु की मदद नहीं करती?

हां! परन्तु अपने देश के साम्राज्यवादियों ी सैनिक पराजयें उनहें दुर्बल करती हैं और उनके क्रांतिकारी उन्मूलन में सहायक हैं। एवं दूसरे पक्ष के मार्क्सवादी लेनिनवादी भी उसी समय अपने देश के साम्राज्यवादियों की सैनिक पराजयों के लिए प्रयास करते हैं।

''केवल बुर्जुआ जो विश्वास करता है कि सरकारों द्वारा शुरू किया गया युद्ध अनिवार्य रूप से सरकारों के बीच के युद्ध के रूप में भी समाप्त होगा और यही वह चाहता भी ह। इसलिए वह इस विचार को 'हास्यास्पद' और 'बेतुका' समझता है कि सभी युद्ध में संलग्न देशों क समाजवादी इस इच्छा को अभिव्यक्त करें कि उन सभी की सरकारों की पराजय हो'' (वी.आ. लेनिनः 'सोसलिज्म ऐंड वार', लंदन; 1940, पृ. 24)।

22. अंध–राष्टभक्ति (शॉविनिज्म) क्या है?

अन्यायपूर्ण युद्ध में अपनी सरकार का उत्तेजनापूर्ण समर्थन (यह नाम नेपोलियन के युद्धों में निकोलस शॉविन, एक अंध राष्ट्रभक्त फ्रांसीसी अफसर, से व्युत्वन्न है)।

23. सामाजिक अंध–राष्ट्रक्ति क्या है?

लेनिन ने अनेक राजनीतिक शब्दों ो गढ़ा जो कई समाजवादी पार्टियों (जिनमें रूस ी पार्टी भी शामिल है। के नाम पर आधारित थे– बीसवीं सदी के प्रारंभ में ये पार्टियां 'सोशल–डेमोक्रैटिक' कहलाती थीं। इसलिए लेकिन वास्तव मे अंध राष्ट्रभक्त राजनेता को 'सोशल शॉविनिस्ट' – (सामाजिक अंध राष्ट्रभक्त) के उपनाम से पुकारा।

24. गुरिल्ला युद्ध शैली क्या है?

एक प्रकार की युद्ध शैली जो संख्या में कमजोर, कम हथियारो से लडने वाले बलों के लिए जब उन्हें अपने से अधिक ताकतवर दुश्मन का सामना करना हो, उपयुक्त होती है। इस लड़ाई में शत्रु के बलों को छोटे यूनिटों को अचानक हमलों से परेशान और दुर्बल किया जाता है और जहां तक संभव हो इन बलों से सीधी मुठभेड़ करने से बचने का प्रयास किया जाता है।

गुरिल्ला युद्ध ऐसे युद्ध की विशिष्ट पद्धति है जिसका उपयोग राष्ट्रीय मुक्ति की लड़ाई के पहले चरण में राष्ट्रीय मुक्ति की सेना करती है। इस रणनीति का उद्देश्य बलों के निर्माण में इतनी वृद्धि करना है जिससे वे अंत में इतने शक्तिशाली हो जाएं कि नियमित युद्ध कर सके और उसके द्वारा विजय प्रप्त कर सकें

25. प्रारंभ में शस्त्रास्त्रों में श्रेष्ठता के बावजूद, सम्राज्यवादी देश जिसे राष्ट्रीय मुक्ति के युद्ध का सामना करना पड़ता है, उे गंभीर कठिनाइयों से जूझना पड़ता है, ये क्या है?

1. वे अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए युद्ध नहीं कर रहे होते;
2. वे अजनवी खेत्र में युद्ध करते हैं;
3. अधिकृत देश में जन साधारण उनसे नफरत करते हैं और उनका विरोध करते है;
4. वे मानव शक्ति संसाधनों में स्थानीय आधार पर ज्यादा कमजोर होते हैं;
5. उनकी आपूर्ति लाइनें ज्यादा विस्तृत और दूर दूर होती हैं;
6. कठपुतली सेनाएं जिनपर वे आंशिक रूप से निर्भर होते हें, अविश्वसनीय होते हैं;
7. उने अपने देश में और उनके अपने सैन्य बलों में, राजनैतिक रूप से सचेतन श्रमिक उनका विरोध करते हैं।

कक्षा आठ : समाजवाद की कार्य–पद्धति

1. समाजवाद क्या है?

समाजवादी क्रांति में राजनैतिक सत्ता पर अपने कब्जे के बाद, श्रमजीवी जनता के द्वारा निर्मित सामाजिक प्रणाली जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग करता है। इस सामाजिक प्रणाली में मनुष्य का मनुष्य के द्वारा शोषण का अंत कर दिया जाता है और जिसमें उत्पादन का केन्द्रीय नियोजन होता है जिसका उद्देश्य रमजीवी जनता का अधिकतम कल्याण करना होता है।

2. समाजवादी समाज में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व किस प्रकार होता है?

1. या तो राज्य के द्वारा जो श्रमजीवी जनता का सामूहिक रूप से प्रतिनिधित्व करता है, या
2. सहकारी संस्थाओं के द्वारा जो किसी विशेष उद्यम के श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करती है।

3. सामाजीकरण क्या है?

ऐसे उद्यम का समाजवादी राज्य द्वारा अधिग्रहण और स्वामित्व, जिसका स्वामित्व पहले सिी पूंजीपति फर्म में निहित था (समाजवादी राज्य ताकत की वह मशीनरी है जिसके द्वारा श्रमजीवी जनता शेष समाज पर शासन करती है) इसका पूंजीवादी में राष्ट्रीयकरण से विभेदीकरण करना चाहिए। जिसमें पूर्ववर्ती निजी उद्यम को पूंजीवादी राज्य अपने स्वामित्व में लेता है (अर्थात पूंजीवादी वर्ग के शासन की मशीनरी उस पर नियंत्रण करती है)।

सामूहिकरण क्या है?

अनेक छोटे उद्यमों को (जो अलग अलग होने के कारण आर्थिक रूप से अकुशल हैं) किसानों ओर दस्तकारों के एक सहकारी संघ में इकट्ठा करना। समाजवाद के निर्माण के दौरान गरीब बुर्जुआ वर्ग को मजदूर वर्ग के मित्र के रूप में कायम रखने के लिए, सामूहीकरण हमेशा स्वैच्छिक होना चाहिए।

सामूहीकरण किसानों और शिल्पकारों के उद्यमों के सामाजीकरण के मार्ग में उठाया गया एक कदम है। जो ग्रामीण और शहरी निम्न बुर्जुआ वर्ग मजदूर वर्ग के ग्रामीण और शहरी सदस्यों में रूपान्तरित कर देता है।

5. उत्पादन का विनियमन समाजवाद के अंतर्गत कैसे होता है?

चूंकि मुनाफा (पूंजीवाद के अंतर्गत उत्पादन का ध्याय और नियामक) समाप्त कर दिया गया है, समाजवाद के अंतर्गत उत्पादन का विनियमन केन्द्रीय राज्य नियेजन के द्वारा होता है। इसका आधार अधिकतम लोकतांत्रिक ढंग से अपभोक्ताओं से सलाह लेना और श्रमजीवी जनता की जरूरतों की अधिकतम संभव संतुश्टि करना है।

6. समाजवाद के अंतर्गत यह क्यों जरूरी है कि उत्पादन क साधनोंका विकास उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन की अपेक्षा ज्यादा तेजी से किया जाए?

क्योंकि उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन (जसके द्वारा श्रमजीवी जनता की जरूरतों को प्रत्यक्ष रूप से संतुश्ट किया जाता है। उत्पादन के साधनों की सहायता से होता है। फलतः उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में लगातार विस्तार उत्पादन के साधनों के उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन की अपेक्षा, तेजी से विस्तार पर निर्भर है।

7. समाजवादी समाज में उपभोक्ता वस्तुओं का वितरण किस आधार पर किया जाता है?

क्योंकि इस चरण में श्रमजीवी जनता की कुल जरूरतों की पूर्ति नहीं हो सकती, इसलिए 'राशनिंग' की पद्धति आवश्यक है और चूंकि उत्पादन के यथा संभव अधिकतम तेजी से विकास की जरूरत है, यह राशनिंग प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो श्रमजीवी जनता के उत्पादन के प्रयास को प्रोत्वाहन दे। परन्तु श्रमजीवी जनता के अधिकम लोगों ने समाजवादी समाज में प्रवेश करते समय ऐसे दृष्टिकोणों और विचरों को अपना रखा है जो

उन्हें पूंजीवाद समाज से विरासत में प्राप्त हुए थे, और उनमें से एक महत्वपूर्ण विचार यह भी है कि उत्पादन के प्रयास में वृद्धि के अनुसार उचित रूप से व्यक्तिगत भौतिक पुरस्कार में भी वृद्धि होनी चाहिए। इन सभी कारणों से समाजवाद के अंतर्गत उपभोक्ता वस्तुओं का वितरण किए हुए कार्य के परिमाण और गुण के अनुरूप होना चाहिए। यह सिद्धांत समाजवादी समाज के इस नारे में अन्तर्निहित हैः ''प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार काम रिाया जाए और प्रत्येक को उसके कायै के अनुसार वेतन दिया जाए''।

8. क्या वितरण का यह आधार उचित है?

पूर्ण रूप से तो नहीं। यह निश्चित रूप से पूंजीवादी समाज के अन्तर्गत वितरण के आधार से अधिक उचित है, जो श्रमजीवी जनता के शोषण पर और अधिशेष मूल्य उत्पादक संपत्ति की राशि पर निर्भर है जो निजी स्वामित्व में (अक्सर विरासत के फलस्वरूप) होती है। परन्तु यह उस सीमा तक अनुचित भी है क्योंकि किसी मजदूर के किए हुए कार्य का परिमाण और गुण उन कारकों पर निर्भर हो सकता है जो उसके नियंत्रण के बाहर है (जैसे वह किसी शारीरिक अक्षमता का शिकार हो सकता है; अपने पड़ोसी की अपेक्षा उस पर निर्भर हो सकता है जो उसके नियंत्रण के बाहर है (जैसे वह किसी शारीरिक अक्षमता का शिकार हो सकता है; अपने पड़ोसी की अपेक्षा उस पर निर्भर लोगों की संख्या अधिक हो सकती है)। यद्यपि इस अनौचित्य को सामाजिक सेवाओं के द्वारा कम किया जा सकता है लेकिन उसे पूरी तौर से दूर नहीं यिा जा सकता जब समाजवादी सिद्धान्त को कायम रखा जाता है।

9. इस अनौचित्य का रिाकरण कैसे हो सकता है?

केवल समाजवाद (जिसकी परिभाशा समाजवाद के पहले चरण के रूप में की गई है) के स्थान में दूसरे चरण अर्थात सच्चे साम्यवाद की स्थापना के द्वारा साम्यवाद के अन्तर्गत इस अनैचित्य का निराकरण जरूरत के अनुसार तिरण के द्धिान्त को स्वीकार करके ही किया जा सकता है। यह सिद्धांत साम्यवादी समाज` इस नारे में अन्तर्नित हैः 'प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार काम कराया जाए और प्रत्येक को उसकी जरूरतों के अनुसार पुरस्कार दिया जाए'।

10. समाजवाद से साम्यवाद में संक्रमण के लिए क्या अनिवार्य पूर्व दशाएं हैं?

प्रथम, भौतिक संपदा के उत्पादन में विशाल वृद्धि जो राशनिंग के बिना संपूर्ण श्रमजीवी जनता की अनिवर्या जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो और

द्वितीय श्रमजीवी जनता के अधिकतम लोगों के दृष्टिकोणों और विचारों में परिवर्तन हो जिससे वे कार्य को सामाजिक कर्तव्य माने और आर्थिक अनिवार्यता के बिना अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करें और वितरण केन्द्रों से वही चीज ग्रहण करें जिसकी उन्हें आवश्यकता हो।

समाजवाद के अन्तर्गत कार्य के अनुसार वितरण का सिद्धान्त इसलिए जरूरी है जिससे साम्यवाद की पहली पूर्व दशा भौतिक संपदा के उत्पादन में विशाल वृद्धि को यथासंभव शीघ्र प्राप्त किया जा सके।

11. समाजवादी राज्य के कार्य क्या हैं?

प्रथम, सत्ताविहीन पूंजीपति वर्ग और उसके समर्थकों का दमन जिससे प्रतिक्रांति को रोका जा सके;

द्वितीय, पूंजीवादी राज्यों के वाह्य सैनिक हस्तक्षेप के प्रयासों से देश की रक्षा करना,

तृतीय, समाजवादी आर्थिक निर्माण का संचालन करना और जनता को मार्क्सवादी लेनिनवादी दृष्टिकोण की शिक्षा देना।

12. समाजवादी राज्य के कार्य का वर्ग चरित्र क्या है?

यह श्रमजीवी जनता का अधिनायक तंत्र है जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग करता है। इससे कम सच यह है कि इसे 'मजदूर वर्ग की तनाशाही' हें, जैसे पूंजीवादी राज्य 'बुर्जूआजी की तानाशाही' हाता है।

13. चूंकि समाजवादी राज्य एक वर्ग का अधिनयकतंत्र है, कया इसे लोकतांत्रिक माना जा सकता है?

इस अर्थ में कि समाजवादी राज्य केवल श्रमजीवी जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करता है और पूर्वतर्वी पूंजीपति वर्ग के हितों का दमन करता है, उसके लोकतांत्रिक चरित्र को सीमित माना जा सकता है। परन्तु

लोकतंत्र शब्द के मूल अर्थ में (आम जनता का शासन) श्रमजीवी जनता का अधिनायकतंत्रा लोकतांत्रिक है। निश्चित रूप से, चूंकि पूंजीपति वर्ग जनसंख्या के छोटेअल्पमत का निर्माण करता है जबकि श्रमजीवी लोग जनसंख्या के विशल बहुमत का निर्माण करते हैं, यह पूंजीवादी राज्य की तुलना मे अत्यधिक लोकतांत्रिक होता हैं।

14, समाजवादी राज्य का अन्ततः लोप हो जाएगा –एंगेल्स। व्याख कीजिए।

जैसे जैसे सत्ताविहीन पूंजीपति वर्ग खत्म हो जाएगा और उनके वंशज श्रमजीवी लोगों में घुल मिल जाएंगे और उनका जीवन दर्शन अपना लेंगे, तो कोई ऐसा वर्ग शेष नहीं रहेगा जिसके दमन ी आवश्यकता समाजवाद को सुरक्षा प्रदान करने के लिए होगी। इसलिए समाजवादी राज्य के आंतरिक दमन करने की जरूरत नहीं रहेगी और राज्य समाप्ति हो जाएगा।

जैसे जैसे अन्य पूंजीवादी देशों के रमजीवी लोग राजनीतिक सत्ता दीनकर विश्व के पैमाने पर समाजवाद का निर्माण शुरू करेंगे, बाह्य सैनिक हस्तखेप का खतरा भी खत्म हो जाएगा।

इस प्रकार, बाह्य प्रतिरक्षा कार्य की राज्य को आवश्यकता नहीं रहेगी और वह लुप्त हो जाएगा।

अंततः इसलिए समाजवादी राज्य शासन के यंत्र से रूपान्तण समाज के प्रशासन के लिए लोकतांत्रिक प्रबन्धन में हो जाएगा।

15. क्या समाजवाद के अंतर्गत मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी आवश्यकता है?

यह आवश्यक है। जेसे मजदूर र्व पूंजीपति वर्ग की राजनीतिक सत्ता का उन्मूलन वतःस्फूर्त तरीक से नहीं कर सकता बल्कि उसे अग्रिम दस्ते की पार्टी के नेतृत्व की जरूरत होती है, जिसकी रणनीति और कार्यनीतियों का आधार मार्क्सवाद लेनिनवाद में निहित होता है, उसी प्रकार उसे अग्रिम दस्ते की पार्टी के नेतृत्व की जरूरत होती है, जिसकी रणनीति और कार्यनीतियों का आधार मार्क्सवाद लेनिनवाद में निहित होता है, उसी प्रकार उसे अग्रिम दस्ते की पार्टी के नेतृत्व की जरूरत अपनी राजनीतिक सत्ता कायम रखने के लिए तथा समाजवादी समाज का निर्माण करने के लिए भी होती है। मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व के बिना श्रमजीवी लेाग अपनी सत्ता कायम नहीं रख सकता।

अंततः तथापि, जैसे समाजवादी राजय का लोप होता है और जैसे संपूर्ण श्रमजीवी जनता की राजनीतिक चेतना का विकास उच्च स्तर पर हो जाता है, तो ऐसे नेतृत्व के अस्तित्व की जरूरत नहीं रहती और पार्ओ का भी लोप हो जाता है।

16. क्या समाजवाद, एक बार स्थापित होने पर स्थायी होगा?

यह स्थायी होगा अगर मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी श्रमजीवी जनता का नेतृत्व और मार्गदर्शन करे।

इस कारण समाजवाद के शत्रु मार्क्सवादी नेनिनवादी पार्टी से प्रयास करते हैं– जो पहले मार्क्सवाद लेनिनवाद का मौखिक समर्थन करती है लेकिन लोकतंत्रीकरण के आवरण में ऐसी नीतियों को स्वीकार करती है जो विपरीत दिशा में ले जाकर पूंजीवाद की पुनः स्थापना कर देते हैं।

17. अनतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में संशोधनवाद क विजय के क्या प्रमुख परिणाम हुए है?

लगभग सभी देशों में जहां समाजवाद स्थापित कर देया गया है।

संशोधनवादियों के द्वारा पूंजीवाद की पुनःस्थापित कर दिया गया है।

संशोधनवादियों के द्वारा पूंजीवाद की पुनः स्थापना के अनेक चरण हैं। केन्द्रीय नियोजन की भूमिका को घटा दिया जाता लाभ की प्रेरणा पर आधारित बाजार अर्थ व्यवस्था को फिर शुरू किया जाता है उद्योगों के प्रबंधाकों को इनके मुनाफों का अनुपास से बहुत लाभांश (उनके 'उत्तरदायित्व' के आधार पर) दिया जाता है जिससे वे राजय पूंजीपति बन जाते हैं जो श्रमजीवी जनता का शोषण करते हैं पार्टी और राजय के नता भ्रष्ट नौकरशाहर बन जाते हैं जो बस नाम बन जाते हैं जो बस नाम में नहीं लेकिन वास्तव में एक फासीवादी तानशाही का प्रशासन चलाते हैं।

जब मजदूर लोग इन परिवर्तनों का पर्याप्त विरोध करने लगते हैं तो अंतिम चरण में लोगों को लामबंद

करके 'समाजवाद' का ध्वंस कर दिया जाता है जो उन्हें इतनी तकलीफ दे रहा था और सामान्य, स्वतंत्र उद्योग पर आधारित, पूंजीवादी प्रणाली की वापसी कर दी जाती है।

औपनिवेशिक पद्यति के देशों में, अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में संशोधनवाद की जीत ने इन कम्युनिस्ट पार्टियों को राष्ट्रीय पूंजीपतियों के राजनीतिक उपकरणों में रूपान्तरित कर दिया है, जो उन्हें झूठे 'समाजवादी नारों' के द्वारा सक्षम करता है कि वे क्रांतिकारी चरण को राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रांति के चरण में कायम रखें और राष्ट्रीय पूंजीवादी राज्यों की स्थापना कर लें जो बाह्य दिखावे में समाजवादी राज्यों ी छवि प्रस्तत करें।

विकसित पूंजीवादी देशों में अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में संशोधनवाद की जीत ने पुरानी कम्युनिस्ट पार्टियों को एकाधिारी पूंजी के उपकरणों में रूपानतरित कर दिया है। वे सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों का रूप ले चुकी है जिन्होंने भ्रामक समाजवाद के लिए शान्तिपूर्ण संसदीय र्मा के पक्ष में क्रांतिकारी पूंजीपति वर्ग की जरूरत होगी तो वह इन पार्अियों को संसदीय ढांचे में स्थान देकर उनका उपयोग श्रमजीवी जनता के साथ छल के उपकरणों के रूप में कर लेगा।

ये घटनाएं, श्रमजीवी जनता पर दुखद प्रहार होने के बावूद अवधि में उन्हं और अधिक कठिन बना देती हैं। इनका समाजवाद के अतिरिक्त और केई दूसरा समाधान नहीं है। का ऐतिहासिक कार्य, इसलिए, यही है कि मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टियों का पुननिर्माण किया जाए उन्हं प्रत्यक संशोधनवादी प्रवृत्ति से मुक्त और सुरक्षित किया जाए और विश्व की श्रमजीवी जनता के अग्रिम दस्ते के रूप में मार्क्वादी लेनिनवादी इंटरनेशनल का पुनर्निर्माण किया जाए।